अनुक्रमणिका

का चित्र—
नट : सी. डी. रामचंद्रन १

मजेदार कहानियां—
मम्मी-विरोधी क्लब : अवतारसिंह ८
बुलेलका निशाना : फज्लुलबारी १२
मैं जेलमें रहूंगा : ब्रह्मदेव १५
चिक्की कैसे सुधरा ? : ममता कालिया १६
हिन्दुस्तानसे सलाम-अलैकुम : रामलाल २८
चीतेके शरीरपर... : सुबोधकुमार ३७
सौ रुपयेका चैक : स्वतंत्र ४०
छोटी-बड़ी लोक-कथाएं : रामनारायण उपाध्याय ४४

चटपटी कविताएं—
ओ तितली तू कहां चली? : सरस्वतीकुमार 'दीपक' १७
मोती और फूल : श्रीप्रसाद ४१
बंदी और बरसात : सुधाकर दीक्षित ५६
मुखर मेंढकी; शेखी : सीताराम गुप्त ५६
नादानी; अजब तमाशा : मंगलराम मिश्र ५७
ग्याऊं : धीरेंद्र काश्यप ५७

मनोहर कार्टून-कथा—
छोटू और लंबू : शेहाब २४

धारावाही उपन्यास—
बुड्ढ मलके कारनामे : निकोलाई नोसोव २०

अन्य रोचक सामग्री—
राम-शरोखा : सुशीला रजनी पटेल ४
ये चमगादड़ (लेख) : विनोद विभाकर ११
चित्र पहेलियां : देवदास 'कुसुम' १९
सोवियत भूमिसे पिताके पत्र—२ : जगदीशचंद्र जैन २६
राष्ट्रपति भवनका उद्यान : विद्यावत ३२
नन्हे बावर्ची (चटकुले) : आशारानी ३९
हमने लिखना कैसे सीखा? : मजहर शम्सी ४८

स्थायी स्तंभ—
कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
छोटी छोटी बातें : सिम्स ३५
लाल टेनिसकी कहानी—३ : हरिमोहन ३८
बच्चोंकी नई पुस्तकें : लक्ष्मीचंद्र गुप्त ५१
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंगभरो प्रतियोगिता नं. ५२ : 'पराग' कला विभाग ५९

राम-झरोखा

राजा दशरथने श्री रामके विवाहके बाद उन्हें ज्येष्ठ पुत्र होनेके नाते युवराज पद देनेका विचार किया। जब दासी मंथराने रामको राज-गद्दी देनेकी बात कैकेयीको बताई, तो वह बहुत खुश हुई और मंथराको पुरस्कारमें अपने आभूषण उतारकर देने लगी (चित्रमें रानी कैकेयी अपने आभूषण उतारकर मंथराको दे रही है)। किंतु मंथराने आभूषण लेनेके बजाय रोना शुरू कर दिया और कैकेयीको पट्टी पढ़ाने लगी कि यदि रामको राज-गद्दी मिल गई, तो उसके पुत्र भरतको रामका सेवक बनकर रहना पड़ेगा और उसकी प्रतिष्ठा भी कम हो जाएगी।

कैकेयीको मंथराकी बात ठीक जंची। उसने मंथरासे इस मुसीबतसे बचनेका उपाय पूछा। मंथराने कैकेयीको कोप-भवनमें जाने तथा दशरथसे दो वरदान, जिन्हें देनेका उन्होंने वचन दे रखा था, मांगनेकी सलाह दी—एक वरदान द्वारा भरतके लिए राज-गद्दी तथा दूसरे द्वारा रामके लिए चौदह वर्षका वनवास। कैकेयीने ऐसा ही किया।

राजा दशरथ कैकेयीकी यह क्रूर मांग सुनकर दुःखके कारण मूर्च्छित हो गए। रामने जब यह सुना, तो वह बिना किसी हिचकके राज-पाट छोड़कर वन जानेको तैयार हो गए (चित्रमें राम वन जानेके पूर्व मूर्च्छित पड़े अपने पिता राजा दशरथसे वन जानेकी आज्ञा मांग रहे हैं)। सीता तथा लक्ष्मणने भी उनके साथ जानेका आग्रह किया।

इसके आगेकी सचित्र कहानी तुम्हें अगले अंकमें पढ़नेको मिलेगी।

दृश्य निर्माण : सुशीला रजनी पटेल
छाया : 'पराग' कला विभाग

प्रशान्त कुमार निनकर

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

★ सविता अग्रवाल, द्वारा श्री के. एल. गुप्ता, प्रिंसिपल, गवर्नमेण्ट कालेज, सीकर (राज.):

यह जानते हुए भी कि सुंदरता दो दिन की मेहमान है, दुनिया सुंदरताके पीछे क्यों पड़ी हुई है?

महीनोंके मेहमानकी बनिस्बत दो दिनके मेहमानकी ज्यादा खातिर की जाती है!

अनाम, अधाम :

माली और तालीमें क्या अंतर है?

ताली खो जाए, तो माली तालेके भीतर नहीं घुस सकता!

वीरेंद्रकुमार नानावटी, इन्दौर :

क्या कारण है कि स्वर्ण-नियंत्रण आदेशके जन्म-दाता श्री मोरारजी देसाई भी स्वर्ण-नियंत्रण-को अब समाप्त करनेके पक्षमें हैं?

स्वर्ण-नियंत्रण और स्वर्ण-निमंत्रणका फर्क जरा देरमें ही समझमें आता है!

रमेशकुमार सोनी, पेन्ड्रा रोड :

सफेद झूठ किसे कहते हैं?

जो अंधेरेमें भी नजर आ जाए!

★ नेसार अहमद, मो. तीन पहाड़, पो. तीन पहाड़, जिला–संथाल परगना (बिहार) :

मेरे भाई साहब कहते हैं कि वह मुझे स्कूल भेजते हैं आदमी बनानेके लिए, लेकिन वहां मास्टरजी मुझे मुर्गा क्यों बनाते हैं?

देशकी खाद्य समस्या हल करनेके लिए—इस समय आदमियोंकी बनिस्बत मुर्गे-मुर्गियोंकी ज्यादा जरूरत है!

विनोदानंद झा, काठमाण्डू :

मुझे परीक्षासे छुटकारा पानेका कोई उपाय बतलाइए?

फिरसे घुटनोंके बल चलना शुरू कर दो!

मुरली मनोहर कासार, बुरहानपुर :

अध्यापक लोग उसी कक्षामें रह जाते हैं और विद्यार्थी पास हो जाते हैं—ऐसा क्यों?

गोलोंके साथ तीर भी निशानेकी तरफ भागने लगे, तो बंटाधार!

कु. मधुलिका शुक्ला, लखनऊ :

रोनेसे दिल हल्का हो जाता है, तो हंसनेसे?

फुल्का!

प्रकाशचंद्र झा, रांची :

लोग मंदिरमें प्रवेश करनेसे पहले घंटा क्यों बजाते हैं?

(अर्त्त) नाद करनेके लिए!

आनंदप्रकाश अग्रवाल, सीकर :

मनुष्य गुस्सेमें लाल-पीला होता है; क्या मनुष्य भी कोई गिरगिट है, जो रंग बदल सके?

मनुष्यमें सब जानवरोंके गुण हैं, केवल हाथ स्वतंत्र और बुद्धि अतिरिक्त!

हरदीपसिंह शामसिंह, उज्जैन :

बुद्धि क्या खाती है?

ज्ञानियोंके साथ रहे, तो अज्ञान; गधोंके साथ रहे, तो घास!

संतोषधर दीवान, जांजगीर (बिलासपुर) :

पेटका मोटा होना और बुद्धिका मोटा होना—दोनोंमें क्या अंतर है?

दोनों एक-दूसरेको दुबला करनेकी तरकीब सोचते रहते हैं!

कन्हैयालाल पंजाबी, ग्वालियर :

लोग कहते हैं 'कांग्रेसके राजमें गधा पंजीरी खाए', तो मनुष्य क्या खाएगा?

देख पराई चूपड़ी, कर्यो ललचावे जी;
मूंछें तर कर प्रेम से, तू भी लस्सी पी!

पंकज साहनी, शीव, बम्बई–२२ :

संसारका तीन भाग पानीसे भरा हुआ है, फिर भी कई जगह पानीकी कमी क्यों है?

किसी मच्छ या मगरमच्छके लिए तो यह आश्चर्यका ही विषय हो सकता है!

सुरेशचंद्र सिसोदिया, हैदराबाद–१२ :

अक्लकी तुलना भैंससे क्यों की गई है?

काला अक्षर भैंस बराबर होने के कारण !

प्रमोदकुमार गमाना, अलीगढ़ :

सोमवारकी शामको लोग व्रत रखते हैं, अगर उस दिन कोई मेहमान आ जाए, तो क्या करें?

स्टेट बैंक बिजनौर ।

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले * का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो: संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१

चमगादड़ोंके मेहमान भी उल्टे ही लटकते हैं!

लक्ष्मण अय्यर, लश्कर :

मनुष्यको पानीमें तैरना सीखना पड़ता है, जबकि जानवरको तैरना सीखनेकी आवश्यकता नहीं होती—ऐसा क्यों?

क्योंकि वे तब तक पानीमें पैर नहीं देते जब तक तैरना न आए!

जवाहरलाल गुप्ता, मोहीउद्दीननगर (दरभंगा):

प्रेम किसे करना चाहिए ?

जिसके पास देनेको सिर्फ दिल और लेनेको दिमाग हो!

महेशकुमार, दिल्ली-६ :

बी. ए., एम. ए. पास करनेपर भी नौकरी देने वाले इम्तहान क्यों लेते हैं?

यह जाननेके लिए कि वे सिर्फ पढ़े ही पढ़े हैं या थोड़ा-बहुत गुने भी हैं!

रविशंकर जायसवाल, बक्सर (आरा) :

लोहेसे लोहा काटा जाता है, कांटेसे कांटा निकलता है, जहरको जहर मारता है, लेकिन पापसे पाप नहीं धुलता—क्यों?

निराकार होनेके कारण!

प्रदोषकुमार सिन्हा, साहिबगंज :

मूंछ स्त्रीलिंग है, फिर भी यह पुरुषोंको क्यों होती है?

इसी अन्यायका प्रतिकार करनेके लिए पुरुष उस्तरा लिये इसके पीछे पड़े रहते हैं!

मुहम्मद हनीफ इब्राहीम, बम्बई-९२ :

शाहजहांने मुमताजकी यादमें ताजमहल न बनाकर कहीं इतना बड़ा स्कूल बनाया होता, तो क्या होता?

जहां भावी मुमताजोंकी यादमें अहर्निश फिल्मी गानोंका पाठ चलता रहता!

कु. सुषमा पुराणिक, इन्दौर :

जब हमारे घरपर कोई मेहमान आता है, तो हम उसे आते समय कहते हैं 'आइए', जाते समय ऐसा क्यों नहीं कहते कि 'जाइए'?

जिससे वह चिढ़कर जानेका इरादा ही न बदल डाले!

अर्जुनलाल दीपानी, कामठी :

जितना दो आंखोंसे दिखाई पड़ता है उतना ही एक आंखसे भी, तो फिर भगवानने दो आंखें क्यों बनाईं?

इसलिए कि आंखोंमें हरेक अपनेको सरदार न समझने लगे!

प्रविण भिकाजी संत, मलाड :

इंसानके बाल बुड्ढे होनेपर ही क्यों पकते हैं?

नियम नहीं—कामचोर विद्यार्थी अपने बाल धूपमें ही सफेद करते हैं!

शिवकुमार शर्मा, लश्कर :

लड़कियां ससुराल जाते समय रोती क्यों हैं?

युद्धपर जाते समय हर कोई अपने हथियारोंकी परीक्षा लेता है!

कु. वंदना बाजपेयी, बैतूल :

जब किसी गधेका फोटो खींचा जाता है, तो वह क्या सोचता है?

यही कि गाना भी साथ ही रिकार्ड हो जाता, तो अच्छा था!

इकबालसिंह, पटना-४ :

कौनसी ऐसी चीज है, जिसे पाकर मनुष्य कभी न मरे?

बदनाम!

महावीरप्रसाद, पेन्डरा (बिलासपुर) :

मांका दूध अधिक शक्तिप्रद होता है या गायका?

यह इस बातपर निर्भर है कि मांका बेटा बनना है या गायका!

रामअवतार सिंह, भौरा (जौनपुर) :

भगवान मिठाईका ही प्रसाद क्यों लेते हैं, नमकीनका क्यों नहीं?

क्योंकि उन्हें प्रसादका अधिकांश पाने वालोंके टेस्टका अधिक ध्यान रखना पड़ता है!

संतकुमार त्रिपाठी, इटावा :

आंखोंके तारे और आसमानके तारेमें क्या अंतर है?

एक उजालेमें चमकता है, दूसरा अंधेरेमें! ●

कहानी

मम्मी विरोधी क्लब

अवतार सिंह

"राजूको क्या हुआ, नीना? अभी तक नहीं आया," हरीशने पूछा।

हरीश, मधु, नीना, टिकू, बिल्लोकी टोली 'चोर-सिपाही' खेलनेको उतावली थी। पर टोलीके कई सदस्य अभी तक नहीं आ पाए थे।

"भैया, आज नहीं आएंगे," राजूकी बहन नीनाने बताया। टोलीमें जैसे बम फटा। सबकी आंखें नीनाकी ओर उठ गईं। राजू ही तो टोलीका मुखिया था।

"क्यों?" मधुने चुप्पी तोड़ी।

"पंखेपर कबूतर बैठा था..." नीनाने कहा।

"फिर...फिर क्या हुआ?" बच्चे धीरे धीरे नीनाके पास खिसकने लगे।

"रोशनदान खुला पड़ा था। भैयाने गुलेलसे कबूतरपर निशाना मारा। कबूतर तो उड़ गया, पर रोशनदानका कांच टुकड़े टुकड़े हो गया।"

पहले जरा रुककर नीनाने टोलीके सदस्योंको गौरसे देखा कि उनपर उसकी बातका क्या प्रभाव पड़ा। फिर बात आगे बढ़ाते हुए बोली, "मम्मीने उसे कानसे पकड़कर पिछली कोठरीमें बंद कर दिया।"

"यानी उस गंदे स्टोरमें?" हरीशने पूछा।

"हां, मम्मी कहती हैं—उसे आज खाना भी नहीं मिलेगा।"

"यह तो सरासर अन्याय है। सरकार जेलमें कैदियोंको भी रोटी देती है। और हां, आज राघु भी तो नहीं आया..." टिकूने चारों ओर नजरें घुमाईं, फिर सीढ़ियोंकी ओर देखा, मानो अभी राघु छतपर आ जाएगा।

"उसकी मम्मीने उसे चनेकी दाल लाने सब्जी-मंडी भेजा है। वह आधा घंटेमें आएगा," मधुने बताया।

"मम्मी... मम्मी! जाने ये सब मम्मियां कैसी होती हैं?" हरीशने नाक चढ़ाई।

"सब एक जैसी; एक ही थैलीकी चट्टी-बट्टी। चाहती हैं बच्चे दिनभर पढ़ें या उनका हुक्म बजाएं। पांच मिनिट खेलनेके लिए जरा बाहर आओ, तो सुननेको मिलता है—दिनभर

खेलती है; फेल हो गई, तो देखना. . ." ग्यारह वर्षीया बिल्लो, टोलीकी सबसे बड़ी सदस्याने मम्मीकी नकल उतारते हुए कहा। सब हंस पड़े।

"मम्मियां हमारी प्रत्येक इच्छाका गला घोंट देती हैं। उस दिन मैंने अपनी मम्मीसे उड़ने वाला जहाज खरीदनेको कहा, तो बोलीं—राष्ट्रीय-संकट है, फिजूल-खर्ची बंद करो," नीना बिल्लोसे सहमत थी।

"यह राष्ट्रीय-संकट क्या होता है?" टिकूने पूछा।

"पता नहीं, जब भी मैं या भैया कोई चीज मांगते हैं, मम्मी यही बहाना कर देती हैं।"

"हमें भी मम्मीकी सब आज्ञाएं माननेसे इनकार कर देना चाहिए," बिल्लोने राह सुझाई।

"लेकिन हरेक मम्मी बहुत बड़ी होती है। चाहे तो एक ही मम्मी हम सबको पीट सकती है," टिकूने कठिनाई बताई।

"कैसे पीट सकती है? क्या तुमने वह कहानी नहीं पढ़ी—संगठनमें बल है," मधुने छूटते ही कहा। उसे वह कहानी जबानी याद थी।

"दरअसल हमें एक मम्मी विरोधी क्लब खोलना चाहिए," हरीशने, जो इतनी देरसे सोच रहा था, एक नया सुझाव दिया।

"लेकिन क्लबमें तो चंदा देना पड़ता है। उसी दिन रामलीला क्लब-वाले चंदा लेने आए, मम्मीने उन्हें 'मधुके डैडी घरपर नहीं हैं' कहकर टाला," मधु बोली।

"मम्मी और पैसे देंगी नहीं। मुझे हफ्तेमें एक रुपया मिलता है। महंगाईके जमानेमें एक रुपयेसे सात दिन आइसक्रीम भी नहीं खा सकते!" नीना भी उदास हो गई।

"क्यों, हम डैडीसे पैसे ले सकते हैं," हरीशने फिर सुझाव दिया।

"पर डैडी खुद मम्मीसे पैसे लेते हैं!" यह बिल्लो थी।

"डैडी कहते हैं—बालिग हो जाने तक चाहें तो बच्चे दावा करके मां-बापसे अपना खर्च ले सकते हैं," वकील बापका बेटा टिकू चहका।

"पर क्लब करेगा क्या?" मधुको नई कठिनाई दीखी।

सुनकर एकबारगी तो सब बच्चे चुप हो गए। आखिर क्लबका सुझाव

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

महाराष्ट्र के गृहमंत्री इस फिल्म के बारे में कहते हैं—"निर्देशक सत्येन बोस ने इस फिल्म को बनाकर समाज पर महान उपकार किया है।"

पूछिये उन भारवोंसे
जो देख चुके हैं

सत्येन बोस कृत

मेरे लाल

संगीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल गीत मजरूह

एक अनोखी कहानी जिसने कलकत्ते में ५८ हफ़्ते धूम मचा दी

ये चमगादड़

—विनोद 'विभाकर'

एक पुरानी कहानी है। एक बार पशु और पक्षियोंके बीच जमकर लड़ाई हुई। उस समय चमगादड़ किसी भी दलमें शामिल नहीं हुआ। वह जिस दलका पलड़ा भारी देखता, उसी दलमें मिल जाता। आखिरमें जब उसकी पोल खुली, तो पशु-पक्षियोंमेंसे किसीने भी उसे अपने साथ शामिल नहीं किया, बल्कि दोनोंने उसे मारकर भगा दिया। कहते हैं कि तभीसे चमगादड़ शर्मके मारे अपना मुंह छिपाए रहता है और रातके अंधेरेमें ही बाहर निकलता है।

यह तो हुई कहानीकी बात, जिसमें सचाईका अंश कम और कल्पनाकी उड़ान अधिक है। चमगादड़ दिनमें शर्मके मारे नहीं, बल्कि इसलिए बाहर नहीं निकलता कि सूरजकी रोशनीमें उसकी आंखें काम नहीं करतीं। वह समूहमें रहना पसंद करता है। छोटी-सी खोह, तंग और संकरी जगहोंमें भी चमगादड़ सैकड़ोंकी संख्यामें एक साथ रह लेते हैं।

सारी सृष्टिमें चमगादड़ ही एकमात्र ऐसा स्तनधारी जीव है, जो उड़ सकता है। यह उड़ता भी बहुत तेज है और इस कलामें कुशलसे कुशल पक्षी भी इसका लोहा मानते हैं। उड़ते समय यदि इसकी आंखोंपर पट्टी भी बांध दी जाए, तो भी इसकी चालमें कोई अंतर नहीं पड़ता। इसकी इस विलक्षण उड़ानका रहस्य इसके कानोंमें है, जो बहुत संवेदनशील होते हैं। उड़ते समय चमगादड़ इतनी हल्की आवाज उत्पन्न करता है, जिसे मनुष्यके कान नहीं सुन सकते लेकिन उसकी आवाजकी तरंगे चालीस या पचास हजार प्रति सैकिंड या उससे भी ऊंची होती हैं। जब इन तरंगोंकी प्रतिध्वनि आस-पासकी चीजोंसे टकराकर वापस लौटती है, तो उसकी मददसे चमगादड़ रास्तेमें आने वाली वस्तु और बाधाओंकी दूरी, आकार और लंबाई-चौड़ाईका अंदाज लगा लेता है और आंखें बंद रहनेपर भी उनसे टकरानेसे बच जाता है।

चमगादड़ बहुत ही शांत और चुपचाप रहने वाला दुबला-पतला जीव है और देखनेमें पंखदार चूहे जैसा लगता है। लेकिन इसके शरीरकी बनावट चूहेसे कुछ भिन्न होती है। आम तौरपर यह भूरे-काले रंगका होता है। पूंछ और कानोंको छोड़कर इसके सारे शरीरपर रोएं अथवा मुलायम बाल होते हैं। इसकी आंखें छोटी, नाक नुकीली और कान चूहे जैसे होते हैं। चमगादड़के दांत बहुत पैने होते हैं। उनकी मददसे यह अपने शिकारको पकड़ता ही नहीं, बल्कि चबाकर निगल भी जाता है।

चमगादड़के फैले हुए पंखोंकी लंबाई एक इंचसे लेकर चार-पांच फुट तक होती है। इसकी अगली टांगे लंबी और पिछली कुछ छोटी होती हैं। इसके पिछले पैरके पंजोंके नख बहुत तेज और हुककी तरह मुड़े हुए होते हैं और उल्टे लटकनेमें इसकी मदद करते हैं। इसकी मादा पक्षियोंकी तरह अंडे नहीं देती, बल्कि उसके बच्चे चौपायोंकी तरह पैदा होते हैं।

आम तौरपर इसकी मादा एक सालमें एक ही बच्चेको जन्म देती है, लेकिन कोई कोई एक बारमें दो बच्चे भी जनती है। बच्चेको यह पेड़पर उल्टे लटके लटके ही जन्म देती है। जब बच्चेके जन्म लेनेका समय पास होता है, तो उस समय मादा अपने पिछले पैर और पूंछकी मददसे एक छोटी-सी टोकरी बना लेती है। इस टोकरीके

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

गुलाबको गूंगे नौकरकी कोई चीज अगर भायी, तो वह थी उसकी खोपड़ी—मुंडी हुई, चिकनी और चमकदार खोपड़ी और उसपर लहराती हुई चाणक्य शिखा। गुलाबकी उंगलियां उस चिकने अंडेपर फिसलनेको मचलती रहतीं। मगर आज तक गुलाबको इतनी हिम्मत न हुई कि उसके सिरको नजर भरकर देख भी सके।

गूंगेको घरमें नौकर हुए अभी कुछ ही महीने हुए थे। पहली ही बार गुलाब उसकी खोपड़ीको गौरसे देखकर मुस्करा दिया था। तब गूंगेने उसे अपनी खूनी आंखोंसे इस तरह घूरा था कि गुलाबको उससे दुबारा आंखें चार करनेकी हिम्मत न पड़ी।

और आज गूंगे चंदरने अपनी खोपड़ी गुलाबकी गोदमें डाल दी थी। गुलाबको तो मानो सारा जहान ही मिल गया था। वह बड़े आरामसे चंदरके सिरको सहला रहा था। उसकी चंपी कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पीतलकी हांडीपर हाथ फेर रहा है और अगर उसपर ठनका मारा जाए, तो ठन्‌की आवाजसे कमरा गूंज उठे। इतना ध्यानमें आना था कि पूरी ताकतसे उसने उसके सिरपर ठनका मारा। कमरा तो झनझना उठा, मगर उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। चंदर उसे अपनी खूनी आंखोंसे घूर रहा था। अचानक उसने उसका हाथ पकड़कर मरोड़ना शुरू कर दिया। गुलाबने चाहा कि चिल्ला दे, मगर उसकी आवाज ही न निकल सकी। हाथ मरोड़कर उसने इतनी ओरसे उसके गालपर तमाचा मारा कि गुलाबकी आंखोंमें बिजली-सी कौंध गई और वह कोनेमें जा गिरा।

तभी गुलाबकी आंखें एकदम खुल गईं। स्वप्न बड़ा भयानक था। कमरेमें अंधकार छाया था और बाहरसे गुस्सेमें शेरू कुत्तेके गुर्रानेकी आवाज आ रही थी। गुलाबने रोशनीके लिए बटन दबाया, मगर बिजली बंद थी।

अचानक शेरू बड़े जोरसे भूंकने लगा। गुलाबने हैंगरसे गुलेल उतारी और दो-चार गोलियोंको पाकिटमें डालता हुआ खिड़की खोलने लगा, क्योंकि कभी कभी गलियोंके आवारा कुत्ते कंपाउंडमें घुस आया करते थे। अभी शेरू शायद उन्हींपर भूंक रहा था।

बाहर हल्की चांदनी फैली हुई थी। शेरू बंधा दिखाई दिया। वह गुस्सेमें भूंकता हुआ दो पैरोंपर बार बार खड़ा हो रहा था। रातको शेरू खुला ही रहता है, मगर आज किसीने उसे बांध दिया था।

गुलाब गुलेलमें गोली फंसाता हुआ निकल गया। तभी नौकरोंके क्वाटरोंकी तरफसे 'चोर चोर' की आवाजें आने लगीं। अभी गुलाब कुछ समझा भी नहीं था कि कोई स्नानघरकी दीवार लांघकर पिछली गलीमें कूद गया।

गुलाब पहले तो ठिठका, फिर वह भी चोरके पीछे लपका। पीछे नौकरोंकी सेना शोर मचाती हुई आ रही थी। चोर गलीसे निकलकर अब

जासूसी कहानी

गुलेल का निशाना

-फजलुलबारी

पिछवाड़ेके मैदानमें दौड़ रहा था । गुलाबने पीछा जारी रखा । मगर चोरसे उसकी दूरी प्रति क्षण बढ़ती ही जा रही थी ।

एकाएक उसके दिमागमें एक तरकीब आई । वह रुक गया और उसने गुलेलसे भागते हुए चोरके सिरका निशाना लगाया । लेकिन शायद पहली बार गुलाबकी गोली चूक गई । चोर भागता रहा । मैदानकी चारों ओर करीब आठ फुट ऊंची चारदीवारी थी । चोर उसीपर चढ़नेकी कोशिश कर रहा था । गुलाबको अच्छा मौका मिला । उसने गुलेलमें दूसरी गोली भरी । फिर बड़े इत्मीनानसे निशाना साधा और तानकर गोली छोड़ी । चोर दीवारपर चढ़नेकी कोशिश कर रहा था । गोली ठीक उसकी बाईं पिंडलीपर लगी । वह अपनेको संभाल न सका । चोरके मुखसे 'अरे बाप रे' की दर्दनाक चीख निकली और वह गिर पड़ा ।

गुलाबने नौकरोंको आवाज दी । मगर चोर भी बड़ा फुर्तीला था । बड़ी फुर्तीसे उठकर वह दीवारपर चढ़ गया । जबतक लोग वहां पहुंचें, वह दूसरी ओर कूद चुका था । दूसरी ओर जानेके लिए एक दरवाजा था, मगर अभी उसपर ताला लगा था और वह भी दूसरी ओरसे । सभी घटनास्थलपर आ चुके थे । नौकरोंके हाथोंमें मोटी मोटी लाठियां थीं । डैडीके हाथमें टार्च थी और मम्मी तो आते ही गुलाबका शरीर टटोलने लगी ।

डैडीने टार्च जलाई । गुलाबकी जासूसीकी प्रवृत्ति जाग उठी थी । वह बड़े ध्यानसे जमीनको देख रहा था । मगर जमीन ठोस और सूखी थी । एकाएक उसकी नजर एक बटुएपर पड़ी । सभी उसपर झुक गए । बटुआ किसी अमीर आदमीका रहा होगा, मगर अभी उसमें एक एक रुपयेके दो नोट और कुछ रेजगारी थी । आगे खोज करनेपर गुलाबने एक नई चाबी पाई । यह कोई महत्वपूर्ण चीज नहीं थी, फिर भी गुलाबने उसे पाकिटमें डाल लिया ।

दूसरा दिन सारा हंगामोंमें ही बीता । डैडीने इस घटनाकी रिपोर्ट पुलिसमें दे दी थी । बटुआ और रेजगारी पुलिसको सौंप दी गई । बटुएपर शहरके प्रसिद्ध व्यापारी बांकेलालकी मुहर थी । बांकेलालसे पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि पिछले महीने उनका बटुआ चोरी गया था, मगर उसमें ज्यादा पैसे नहीं थे ।

गुलाबके घरमें यह पहली घटना नहीं थी । इस महीनेकी यह तीसरी घटना थी । पिछली बार तो गुलाबकी ही अलार्म घड़ी किसीने उड़ा दी थी । भैयाका ट्रांजिस्टर सेट तो भटियारेकी दूकानमें मिला था । मगर इस बारकी यह घटना बहुत व्यवस्थित थी । मम्मीके कमरेकी तिजोरी टूटी हुई मिली । कोई कीमती जेवर तो खैर नहीं गया था, मगर कीमती नगीनोंका डिब्बा वहांसे अवश्य गायब हो चुका था ।

दिन गुजरते रहे । इस घटनाको हुए करीब महीना होनेको आया । इतनी दौड़-धूपका कोई विशेष फल नहीं निकला, वैसे भविष्यके लिए एक पठानको चौकीदारीके लिए रख लिया गया था । सभी इस घटनाको भूल चले थे । गुलाब भी मजेमें था । चंदरका सपनेमें खाया हुआ तमाचा वह भूल चुका था । उसे फिर उसकी खोपड़ी प्यारी लगने लगी थी और वहां लहराती हुई ऊसरकी दूब उखाड़नेको उसके हाथ मचलने लगे थे ।

शामका वक्त था । गुलाब अपनी गुलेलमें नया और कड़ा रबर लगा रहा था, क्योंकि आज एक कौवा उससे घायल होकर भी उड़ता चला गया था । रबर लग गया था । गुलाबने

पेप्सोडेण्ट में मिले इरियम प्लस से दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं

यह देखिए, किस तरह : केवल पेप्सोडेण्ट में ही वैज्ञानिक विधि से तैयार किया हुआ तत्त्व इरियम प्लस होता है जिसके कारण चमत्कारी झाग बनता है। यह घना, चमत्कारी झाग मुँह के सभी हिस्सों में पहुँच कर अच्छी तरह सफ़ाई करता है। इसमें दाँतों की स्वाभाविक सफ़ेदी प्रकट करने की विशेषता है जिसके कारण दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं—ऐसे साफ़ और सफ़ेद जैसे कि पेप्सोडेण्ट से ही हो सकते हैं। साथ ही, इससे मुँह में पेपरमिण्ट की सी ठंडक और ताज़गी महसूस होती है।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड
का
एक उत्कृष्ट उत्पादन

'मैं जेल में रहूंगा'

—ब्रह्मदेव

आजसे लगभग १५० वर्ष पहले हमारे ग्राममें एक पंडित धनीराम रहते थे। वह बड़े लंबे-चौड़े आदमी थे। उनके पास जमीन तो थोड़ी ही थी, परंतु परिवार काफी बड़ा था, अतः वह कभी किसीका खेत काट लाते, तो कभी किसीका चरखा, गरारी या जूआ आदि उठा लाते। एक बार वह चोरीके इल्जाम में पकड़े गए और उनपर मुकदमा चला और हाकिम-परगनाने उन्हें छह मासकी सजा सुना दी।

पं. धनीराम जेल भेज दिए गए। जेलर एक अंग्रेज था। वह सभीको काम करनेके लिए देता था। पं. धनीरामको चरस द्वारा कुएंसे पानी निकालकर सब्जीकी सिंचाई करनेका काम दिया गया। पं. धनीरामको इस कामको करते हुए एक सप्ताह हो गया था, अतः एक बार जेलर उधर घूमता हुआ आ निकला। उस समय 'गरारी' चूं-चूं-की आवाज कर रही थी। आवाज सुनकर जेलर बोला, "यह आवाज क्यों करती है?" पं. धनीराम बोले, "हुजूर, यह घी मांगती है।" जेलरने घी मंगाकर दे दिया। पं. धनीरामने थोड़ा-सा घी गरारीके छेदमें लगा दिया, तो गरारीने आवाज करना बंद कर दिया। इसपर जेलरने एक पाव घी रोजका बांध दिया। अब क्या था, पं. धनीराम कभी कभी थोड़ा-सा घी गरारीके छेदमें लगा देते, शेष स्वयं खा जाते। वह छह मासमें काफी मोटे-ताजे हो गए।

जब उनकी सजा पूरी हुई, तो उनको छोड़ा गया। पं. धनीराम जेलरसे कहने लगे, "हुजूर, मुझे तो यहीं रख लीजिए। बाहर जाकर मुझे यह सब कहां मिलेगा जो यहां मिलता है!" ●

एक गोली चमौटीमें फंसाई और निशानेके लिए इधर-उधर देखने लगा। तभी उसके चेहरेपर मुस्कराहट दौड़ गई। चंदर अपने सिरपर घड़ा रखे दूसरी ओर जा रहा था।

गुलाबने आव देखा न ताव, दाईं आंख दबाके घड़ेपर निशाना लगाया। गोली सनसनाती हुई चली और गुलाब आड़में छिप गया। तभी उसने 'अरे बाप रे' की दर्दनाक चीख सुनी। गुलाबने झांककर देखा, चंदर जमीनपर भौंचक्का बना बैठा था। उसके सिरका घड़ा फूट गया था। तभी गुलाबका चेहरा गंभीर हो गया और वह चुपचाप खिसककर डैडीके कमरेमें चला आया। उसने टेलिफोनका रिसीवर उठाया और किसीका नंबर मिलाने लगा।

"हलो, पुलिस स्टेशन," उसने कहा, "जी, मैं वर्मा साहबका लड़का बोल रहा हूं। हमारे घर जिसने चोरी की थी वह पकड़ा गया है . . .जल्दी आइए . . .बहुत जल्दी।" फिर वह कमरेसे निकलकर बाहर आ गया और पुलिसकी प्रतीक्षा करने लगा। दस मिनिटमें पुलिसकी गाड़ीके आते ही गुलाब सिपाहियोंको लेकर फौरन अंदर चला आया। घरमें खलबली मच गई। बड़ी देरकी पूछताछके बाद चंदरको गिरफ्तार कर लिया गया। इंस्पेक्टरने उसे पूर्व परिचित चोर बताते हुए गुलाबकी पीठ थपथपाई।

डैडी घरमें नहीं थे। वह भी खबर पाकर दफ्तरसे दौड़े आए। उन्होंने गुलाबकी पीठ ठोंकी और पूछा—"तो तुम्हें उसपर पहलेसे ही संदेह था?"

"जी नहीं, मैं तो उसे बिल्कुल बुद्ध और गूंगा समझता था। मगर गुलेलकी गोली उसके सिरपर रखे घड़ेमें लगी, तो उसकी चीख सुनकर मैं चौंक गया।"

"क्यों?" मम्मी मुस्कराईं।

"सीधी-सी बात है। गूंगेके मुंहसे 'अरे बाप रे' सुनकर कौन नहीं चौंकता?" गुलाबने स्वरमें गंभीरता लानेकी कोशिश की।

"फिर एक कारण और भी था," गुलाबने आगे कहा। "उसकी चीख ठीक वैसी ही थी, जैसी मैंने उस दिन चारदीवारी फांदते समय चोरकी सुनी थी।"

"प्रमाण पक्का नहीं रहा," डैडीने कहा।

गुलाब मुस्करा दिया। "उसकी पिंडलीपर गुलेलकी चोट है। फिर चोरके भागते वक्त जो एक नई चाबी मुझे पड़ी मिली थी वह चंदरके संदूकके तालेकी है," उसने कहा।

अचानक शेरू भूंकने लगा। अंधेरा फैल चुका था। गुलाब गुलेल संभालता हुआ बाहर भागा। डैडीने मुस्कराकर कहा, "भई, यह चोर नहीं, पड़ोसका कुत्ता होगा!" ●

कहानी

चिक्की कैसे सुधरा!

—ममता कालिया

चिक्कीके लिए सुबह उठना सबसे मुश्किल काम था। उसकी मम्मी रातमें उसे कितनी भी जल्दी सुला देती, वह सवेरे स्कूल जानेमें हमेशा देर कर देता।

चिक्कीकी स्कूल-बस सवेरे आठ बजकर बीस मिनिटपर उसे लेने आती थी। चिक्की पौने आठ तक बिस्तरपर पड़ा अंगड़ाइयां लेता रहता। नौकर आकर कहता, "बाबा...बाबा...उठो!"

चिक्की आंख मींचकर रजाई सिरपर खींच लेता।

मम्मी कहती, "चिक्की बेटा, देर हो रही है।"

चिक्की कहता, "ऊं ऊं..." और फिर सो जाता।

बड़ी जीजी, छोटी जीजी सब जोर लगातीं, पर चिक्की राजा पौने आठके पहले आंखें न खोलता और फिर सारा घर चिक्कीकी तैयारीमें लग जाता। बड़ी जीजी जल्दी जल्दी उसका बस्ता तैयार करतीं, पर जीजीको क्या पता कि चिक्कीको आज कौनसी किताब ले जानी है। स्कूलमें टीचर कहतीं– अंग्रेजीकी रीडर निकालो। चिक्की अपना बस्ता खोलता, तो उसमें हिन्दीकी किताब मिलती। चिक्की रोज स्कूलमें तय करता कि अबसे वह अपना बस्ता खुद तैयार करेगा, पर सुबह जब निदिया रानी उसकी आंखें मींचती, तो चिक्की सब भूल जाता। फिर तो यह हालत होती कि चिक्कीको दौड़कर बस पकड़नी पड़ती। एक तरफ डैडी डांटते, दूसरी तरफ जीजी जल्दी मचातीं। कभी दूध पीना रह जाता, कभी टोस्ट खाना। देरसे उठनेके कारण चिक्कीको स्कूलमें, पढ़ाईके समय जमुहाई आ जाती। वह मुंहपर हाथ रखता, पर टीचर देख लेती और चिक्कीको सजा मिलती।

चिक्कीको यह सब बुरा लगता, पर वह अपनी आदत छोड़ नहीं सकता था। सोना उसे बहुत पसंद था। उसने भगवानसे प्रार्थना की—'हे भगवान, जल्दीसे छुट्टियां आएं, तो मैं रात-दिन सोऊंगा! एक बार मेरी नींद पूरी हो जाएगी, तब मैं अपने आप सुबह जल्दी उठने लगूंगा।'

बड़े दिनकी छुट्टियां हुईं। स्कूलमें सब बच्चोंने अपने अपने प्रोग्राम बना रखे थे।

चिक्कीने भी छुट्टीके पहले ही दिन घरमें सबसे कह दिया, "सवेरे मुझे कोई न उठाए। मैं दो दिन तक सोऊंगा।"

बड़ी जीजीने कुछ कहनेके लिए मुंह खोला, पर मम्मीने एक तरकीब सोच ली थी, उन्होंने इशारेसे उसे मना कर दिया। घरमें सभीसे मम्मीने कह दिया, "चिक्कीको कोई न उठाए, वह दो दिन तक सोएगा!"

चिक्की बहुत खुश। रातको वह खुशीके कारण उछलता रहा।

सवेरे जब उसकी आंख खुली, कमरेमें धूप ही धूप भरी हुई थी। उसकी दोनों जीजियां नहा चुकी थीं और पढ़ रही थीं। उसने मुंह बनाया,

"ऊं. . .ऊं. . ." और फिर सो गया। काफी देर बाद चिक्कीकी नींद टूटी, तो उसे बहुत जोरसे भूख लगी। उसने आवाज लगाई, "मम्मी!"

मम्मी नहीं आई।

उसने आवाज लगाई, "जीजी!"

जीजी नहीं आई।

वह चिल्लाया, "सुंदरसिंह!"

नौकर भी नहीं आया।

चिक्की झुंझलाता झुंझलाता बिस्तरसे उठा। उसने देखा, खानेके कमरेमें सब लोग खाना खा रहे हैं। उसे देखकर मम्मी एकदम उठकर आईं, "ए चिक्की, तुम्हें दो दिन तक सोना है, चलो, तुम्हें बिस्तर तक पहुंचा दूं।" चिक्की खिसियाया हुआ वापस बिस्तरमें छिप गया।

वह रजाईके अंदर पड़ा हुआ था और भगवानसे मना रहा था—'हे भगवान! ज्यादा नहीं तो मुझे किसी तरह एक टोस्ट ही दे दो!'

थोड़ा समय और गुजरा। चिक्कीने मुंह उघाड़कर देखा, घरके सब लोग चाय पी रहे हैं। मम्मीने शायद कुछ स्पेशल चीज बनाई थी और दोनों जीजियां बड़ी शानसे खा रही थीं।

चिक्कीने अपने होंठोंपर जीभ फेरी और उसका मन खूब जोरसे चिल्लानेको हुआ।

चाय पीनेके बाद जीजी उसके कमरेसे गुजरीं, तो चिक्कीने पुकारा, "जीजी!"

जीजीने कहा, "श. . . श! तुम्हें सोते रहना चाहिए।"

चिक्की परेशान हो गया। उसे इस समय बिस्तर बुरा लग रहा था। वह भगवानसे मना रहा था, 'हे भगवान, ज्यादा नहीं तो किसी तरह मुझे एक रोटी ही दे दो।'

चिक्कीके लिए बिस्तरमें एक एक मिनिट काटना मुश्किल हो रहा था। भूखके मारे उसकी जान निकल रही थी। उसे अपने दांत भी बासी लग रहे थे, क्योंकि उसने दातुन नहीं की थी। उसके कमरेमें कोई नहीं आ रहा था। खिड़कीमेंसे उसे बाहर बच्चोंके खेलनेकी आवाज आई और उसका बहुत मन हुआ कि वह बाहर जाकर खेले, पर उसे तो बिस्तरपर ही रहना था।

शामको दफ्तरसे डैडी आए। घरके सब लोग फिर खानेके कमरेमें बैठे। उस कमरेसे हंसने-बोलनेकी तेज आवाजें आ रही थीं।

चिक्की बिस्तरसे उठा और धीरेसे उस कमरेमें घुसा। वह मम्मीकी कुर्सीके बिल्कुल पास खड़ा हो गया, "मम्मी, मुझे माफ कर दो, अब मैं कभी देरसे नहीं उठूंगा।"

मम्मीने उसके दोनों गालोंको चूम लिया और जीजीने उसके मुंहमें रसगुल्ला भर दिया। ●

ओ तितली तू कहां चली?

ओ तितली, तू कहां चली?
बता बता तू कहां चली?

रंग-बिरंगे पंखों वाली,
देख किसे इतनी मचली?
हवा-हिंडोले झूल रही तू,
रस पी-पी कर सदा पली।
ओ तितली, तू कहां चली?
किसने तेरा रूप सजाया,
सोच रही यह कली कली।
कली कली की बातें सुन कर,
तेरे मन की कली खिली।
ओ तितली, तू कहां चली?

हरे बिछौने पर तू उड़ती,
लगती सचमुच बड़ी भली।
आंख-मिचौनी खेल रही तू,
कली कली की गली गली।
ओ तितली, तू कहां चली?
क्या गुपचुप बातें करती है,
बता बता हमको, पगली!
किस सागर में जो जाती है,
बनकर सोने की मछली?
ओ तितली, तू कहां चली?

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'

Prashant Kumar.

बैंक, किसे कहते हैं, डैडी !

जहां, हम अपना रुपया जमा करते हैं और जरुरत पर निकाल लेते हैं।

आप रुपया घर में ही क्यों नही रखते ?

रुपया घर में रखना सुरक्षित नहीं है। घर से रुपया चोरी हो सकता है चूहे काट सकते हैं अथवा दीमक लग सकती है। रुपया अनावश्यक चीजों पर भी खर्च हो सकता है। बैंक में हमारा रुपया हर समय सुरक्षित रहता है। और फिर बैंक हमारे रुपये पर ब्याज भी तो देता है। इससे हमारा धन भी बढ़ता है।

यह तो कमाल की बात है डैडी। आपका कौनसा बैंक है ?

पंजाब नेशनल बैंक, बेटा। यह देश के सबसे बड़े और सबसे पुराने बैंकों में से है। देश भर में इसकी ४७५ से अधिक शाखाएं हैं।

पंजाब नेशनल बैंक

near state bank. Bijnor

चित्र-पहेलियां

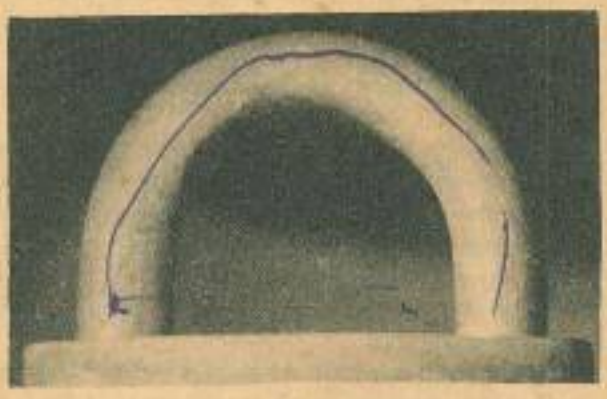

(१)

(५)

(२)

(३)

(६)

(७)

(८)

बच्चो, इस चित्र-पहेलीमें फोटो कैमरेकी करामातसे अजीब अजीब आकार-प्रकारकी शक्लें दी जा रही हैं। इन शक्लोंका असली रूप क्या है? जरा पहचाननेकी कोशिश करो। यदि सफलता न मिले, तो उत्तरके लिए देखो पृष्ठ ४७।

फोटो : देवदास 'कुसुम'

बुद्धूमलके कारनामे

धारावाही उपन्यास

लेखक : [illegible]

चित्रकार : [illegible]

परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ बौने रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो जातियोंके थे —बौने लड़के और बौनी लड़कियां। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ सुबोधके बनाए एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारेमें कुछ खराबी आ गई। सुबोध तो पैराशूटके सहारे कूद गया, लेकिन बाकी सबको लिए-दिए गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया।

नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचानेवाली थी बौनी लड़कियां, बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हुए हैं, तो वह तुरंत कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां जा पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें नंबरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे।

सो, एक एक करके सभी बौने अस्पतालसे रिहा होकर बौनी लड़कियोंके साथ सामूहिक नृत्यकी तैयारीमें लग गए। तैयारी अभी जोरोंसे चल ही रही थी कि तभी बुद्धूमल और उसके साथियोंको खोजता हुआ सुबोध वहां आ पहुंचा। बौने लड़के अपने असली नेताको फिरसे अपने बीच पाकर बहुत खुश हुए, लेकिन गप्पी बुद्धूमलकी बौनी लड़कियोंके हाथों बुरी दशा हुई। यह तुम पिछले अंकमें पढ़ चुके हो, अब इस उपन्यासकी अंतिम किस्त पढ़ो।

(२९)

उसी समय आरकेस्ट्राने एक बड़ी प्यारी धुन छेड़ी और हर कोई नाच उठा। झटपटरामने झटपट काले बालोंवाली मिश्रीका हाथ थामा और नाचका एक राउंड घूम गए। सुबोध हेमपुष्पाके साथ नाचने लगा। रूखारामने बर्डीका हाथ थामा—और लो आश्चर्य, घोर आश्चर्य—डाक्टर गोलीचंद डाक्टर मधुपीके साथ थिरक रहे थे!

अस्पतालके सफेद कपड़ोंके स्थानपर डाक्टर मधुपीने इस समय फूलदार फ्राक पहन रखी थी, जो उसपर बहुत फब रही थी। किसीको गुमान तक न हो सकता था कि वह वही डाक्टर मधुपी थी, जो अस्पतालमें सबके ऊपर इतना कठोर अनुशासन रखती थी। उसके

चेहरेपर एक मुस्कान थी और उसका हाथ डाक्टर गोलीचंदके कंधेपर था और वह नाचके चक्करपर चक्कर लगा रही थी। वह कह रही थी :

"यह तो आपको मानना ही होगा कि हमारा इलाजका तरीका आपके तरीकेसे अच्छा है। शहद सारी दवाओंकी एक दवा है; चोट हो, जख्म हो, जलेका घाव हो, सूजन हो— कुछ भी हो; शहद दो और सब साफ। यह असली कीटाणु-नाशक दवा है और यह फसादको बढ़नेसे रोकती है।"

"मैं इस बारेमें आपसे सहमत नहीं हूं," डाक्टर गोलीचंद नाचते नाचते कह रहे थे। "सभी तरहके जख्म, फोड़े-फुंसी आयोडीनसे ठीक होते हैं और आयोडीन ही वह कीटाणु-नाशक चमत्कारी दवा है, जिससे फसाद बढ़नेसे रुकता है।"

फसाद शहदसे दूर होता है या आयोडीनसे— यह तो तय न हो पाया, अलबत्ता डाक्टर गोलीचंद और डाक्टर मधुपीके बीच फसाद बढ़ता ही चला गया। डाक्टर गोलीचंदका ख्याल था कि शहद लड़कियोंके लिए ज्यादा मुफीद है, पर लड़कोंके लिए आयोडीन ही अधिक लाभकारी है, क्योंकि उसे लगानेसे जो चिरमिराहट होती है उससे नानी याद आती है।

आखिरकार डा. मधुपीने कहा, "अच्छा, अब इस बातको घसीटनेसे कोई फायदा नहीं। आपको साथ लेकर नाचना तो एकदम असंभव है।"

"नहीं, आपके साथ नाचना असंभव है," डा. गोलीचंदने तुर्की-बतुर्की जवाब दिया।

उसने उसको बद्धू कहा, उसने उसको भोंदू कहा। उसने उसको नीम-हकीम बताया और उसने—जाने दो—दोनोंके दोनों जहांके तहां जड़ बनकर खड़े हो गए और दूसरे जोड़े इधर नाचते हुए आकर इन दोनोंसे टकराने लगे। मजबूर होकर उन्हें फिर नाचमें लगना पड़ा। लेकिन बीच बीचमें बात उठी, तो फिर वही झगड़ा।

गोलाराम मिस मोटोके साथ नाच रहे थे। उनकी बातचीत दूसरी ही तरह की थी। गोलाराम पूछ रहे थे, "तुम्हें इमरती अच्छी लगती है?"

मोटोने कहा, "हाय! बहुत अच्छी लगती है!"

"अच्छा, पर मुझे गुलाबजामुन उससे भी ज्यादा अच्छी लगती है।"

"और मुझे उससे भी ज्यादा आइसक्रीम भाती है।"

मोड़मल चिप्पीके साथ नाच रहे थे। चिप्पी उनसे कार चलानेका गुर सीखनेमें लगी थी। बुद्धूमल अन्नपुष्पाके साथ चक्कर काट रहे थे। नाचनेके नामपर वह मेंढककी तरह इधर-उधर कूदते फिर रहे थे और दूसरोंके पैर चीत रहे थे। कभी वह इससे टकराते, कभी उससे। आखिरकार अन्नपुष्पा उनको साथ लेकर एक बेंचपर जा बैठी। बुद्धूमलने स्वीकार किया कि उन्हें नाचवाच कुछ खास आता नहीं। उनकी इस सत्यवादितासे अन्नपुष्पा प्रसन्न हो गई और उसने उनके साथ खूब मिठ्ठी कर ली। लेकिन दोस्त बननेपर एक-दूसरेको पत्र लिखना भी जरूरी होता है। बुद्धूमल बेचारे पढ़ना-लिखना क्या जानें? पर यह कहें भी कैसे? बोले :

"पत्र लिखनेकी क्या जरूरत है? हम कोई बहुत दूर दूर तो रहते नहीं। जब चाहेंगे मिल लिया करेंगे और बातचीत किया करेंगे।"

"तुम कितने बोर हो, बुद्धूमल!" अन्नपुष्पाने कहा, "जो मैं कहती हूं वही तुम नहीं करोगे। काश कि तुम्हें पता होता कि एक-दूसरेको पत्र लिखनेमें कितना मजा आता है!"

आखिर बुद्धूमलजीने यों ही हामी भर दी, "अच्छी बात है, मैं तुम्हें पत्र लिखूंगा।"

प्रतिक्रियाका सिलसिला

रेल के डिब्बे में खतरे की जंजीर का बहुत महत्व है। इसे बिना सोचे-विचारे खींचने से बहुत-सी रेल गाड़ियां समय पर नहीं पहुंच सकेंगी और पूरे टाइम-टेबल में गड़बड़ी पैदा हो सकती है।

खतरे की जंजीर तभी खींचिये ...जब सचमुच खतरा हो।

मध्य रेलवे

झूठे ख़तरे का परिणाम है देरी।

जल्दी ही अंधेरा भी हो गया। चारों तरफ रंगबिरंगी लालटेनें जल उठीं। पेड़ों और पैवीलियनोंपर, झोपड़ियों और घासफूसके पीछे—लगता था कोई रहस्यपूर्ण रंगबिरंगा प्रकाश उनके पीछेसे छनकर आ रहा है। उसी समय मंचके सामनेका नीला परदा हटा और बौनी कवयित्री मंजरी मंचपर प्रकट हुई। सबने हर्षसे तालियां बजाईं। तानप्रकाशने आरकेस्ट्रापर एक मधुर धुन छेड़ी और मंजरीने कविता-पाठ किया, जिसका जोर दोस्तीसे मिलने वाली खुशियोंपर था। सबने उसे खूब पसंद किया।

इसके बाद बारह बौनी लड़कियोंने नृत्य प्रस्तुत किया। महीन फाकों और रंगबिरंगे रिबनोंमें वे तितली-सी इधरसे उधर थिरक रही थीं। सबने तालियां बजाईं और उनकी गड़गड़ाहटसे सारा मंडप गूंज उठा। इसके बाद पतंगपुरके एक अतिथि लड़केने कई गाने गाए। उसकी खूब तारीफ हुई।

तानप्रकाशके आह्वानपर फूलनगरके लड़कोंने एक मधुर कोरस गाया। कोरस एक हरे टिड्डेके बारेमें था, जिसे फूलनगरके महान कवि श्री सरगमने लिखा था। कोरसके बोल ये थे :

हरी घासपर उड़ता था वह,
नीले पंखोंवाला था,
और गुलाबी आंखें उसकी,
टिड्डा वह मतवाला था।
ना ही हरी घास वह खाता,
मित्र भृंगको नहीं सताता,
मक्खीको भी छूता नहीं,
मक्खीको भी छूता नहीं।

लेकिन एक लालची कीड़ा रे,
नहीं पराई जिसको पीड़ा रे,
वहीं फुदकता आया,
जबड़ा अपना फैलाया —
और भृंग मित्रको उसने ग्रास बनाया रे!

हाय! अपने रंगढंगसे
जो हो ऐसा संत
कैसे आता उसका इतना
हृदयविदारक अंत!

गीत इतना शोकपूर्ण था कि गाने वाले भी अपने आंसू नहीं रोक पा रहे थे। सबके सब उस बेचारे टिड्डेके प्रति शोकाकुल थे, जिसे लालची कीड़ेने चट कर लिया था। हरेककी आंखोंसे टपाटप आंसू गिर रहे थे।

लेकिन सुबोधने उन्हें बताया कि वे इतने शोकाकुल न हों, क्योंकि वास्तवमें टिड्डा इतना सज्जन नहीं था। उसने मक्खीको आहार बनाया था। तब लोग मक्खीके प्रति शोकाकुल हो उठे। सुबोधने उन लोगोंका मजाक बनाया कि वे मक्खीके अंतपर रो रहे हैं, क्योंकि मक्खी सबसे गंदा कीड़ा है, बीमारी फैलाता है और उसका मरना ही बेहतर है।

रोते रोते बुद्धूमलकी ऐसी हिचकियां बंधीं कि सबके सब ताज्जुबसे उनकी ओर देखने लगे। आखिर पता चला कि रोते रोते उन्हें अपने मित्र बोरेरामकी याद हो आई। वह चलते समय उससे विदा लेकर भी नहीं आए थे और यही उनके सुबकनेका मुख्य कारण था। यह पता लगते ही हरेकको घरकी याद हो आई। डा. गोलीरामको चिंता हो गई कि कहीं फूलनगरमें कोई बीमार न हो गया हो। सुबोधने लौट चलनेके लिए अगले दिनकी तारीख तय कर दी।

फौरन खबर बिजलीकी तरह लड़कियोंमें भी फैल गई। वे बड़ी कठिनाईसे इसके लिए सहमत हुईं। बुद्धूमलको तो अन्नपुष्पाके सामने ऐसा सकता-सा मार गया कि उनकी बोलती ही बंद हो गई। बस, खड़े खड़े पांवके अंगूठेसे जमीन कुरेदते रहे। अंतमें जब दोनोंकी आंखें मिलीं, तो अन्नपुष्पाने पूछा : "मैं तुम्हारे लिए एक झोला बना दूं?"

"बना दो," बुद्धूमलने रुआंसी आवाजमें कहा।

अगले दिन सुबोध और उसके मित्र घर जानेके लिए चल पड़े। उन्होंने पैदल ही जाना तय किया था, क्योंकि गुब्बारा इतना फट गया था कि उसे सीना मुश्किल था और फिर हवा भी उनके विरुद्ध थी। कुतुबनुमा लेकर सुबोध सबसे आगे चला। उसके पीछे डा. गोलीचंद, फिर मोड़ूमल व मेठूमल और सबके बादमें बुद्धूमल।

सबके कंधोंपर झोले थे, जिन्हें हरागांवकी लड़कियोंने बनाकर उन्हें उपहारमें दिया था। किसीमें रास्तेके लिए चने-कुरमुरे थे, तो किसीमें फूलनगरमें बोनेके लिए फलोंके बीज थे। शरबतीलालने अपने झोलेमें तरबूजके बीज खूब

(कृपया पृष्ठ ३४ देखिए)

छोटू और लंबू
साथियो, इसी महीने में आज से कई साल पहले हमने अंग्रेजों से आजादी हासिल की थी...
...लेकिन आज हम को इस बात की याद में केवल खुशी न मनानी चाहिए, बल्कि कुछ अच्छा और बड़ा काम करना चाहिए...
...आइए, हम अपने मुहल्ले में एक छोटी-सी सरकार बनाएं। केंद्रीय सरकार देश के लिए काम करती है, हमारी सरकार मुहल्ले के लिए काम करेगी!
ठीक है, ठीक है, प्रधान का चुनाव होना चाहिए!
अच्छी बात है! तो बताइए आप में से कौन कौन सज्जन इस चुनाव में खड़े होना चाहते हैं?
न, बाबा, हम में से कोई भी मुहल्ले का प्रधान बनने का बोझ उठाने को तैयार नहीं!
हम चाहते हैं कि आप लोग खुद ही इस बड़ी जिम्मेदारी को संभालें!

मंजूर है! लेकिन इसके लिए आपको रोटी-टैक्स, कपड़ा-टैक्स और मकान-टैक्स देना होगा, ताकि शासनका काम चल सके!
ठीक है, ठीक है!
और इस तरह छोटू-लंबू बड़ा काम कर बैठे— उस दिन खुशी में मुहल्ले में एक बड़ा जुलूस निकला।
छोटू-लंबू...
...जिंदाबाद
एक दिन घर में
क्या मजे हैं आजकल। बैठे बैठे अच्छा खाना, कपड़ा और मकान हासिल है, कामकाज के लिए नौकर-चाकर हैं!
अरे, हम भी कुछ हैं!
दस-पंद्रह दिन बाद उनके घर पर...
तुमने अबतक मुहल्लेवालोंके लिए कुछ नहीं किया, केवल रोटियां तोड़ते हो!
हममें और केंद्रीय सरकारमें यही तो अंतर है! केंद्रीय सरकार जनता के लिए बहुत कुछ कर के लोगोंको सरकारी मदद पर आसरा लगाए रखने की आदत डालती है...
...और तुम हमारा शुक्र करो कि हम तुम्हें सिखा रहे हैं— अपनी मदद आप करो, भगवान तुम्हारी मदद करेगा!
फिर तुम हराम की क्यों खा रहे हो? हम अपनी मदद आप कर लेंगे!
बचाओ, बचाओ!

सोवियत भूमि से

— जगदीशचंद्र जैन

यूरोपिया होटल,
लेनिनग्राड, ३१ अक्तूबर १९६५

प्रिय कल्पना,

जिस प्रकार बम्बईमें ट्रामें, बसें और बिजली-से चलने वाली स्थानीय रेलगाड़ियां हैं, वैसे ही यहां भी हैं। केवल एक ही बात है कि जैसी मुसाफिरोंकी रेल-पेल और धक्का-मुक्की अपने यहां देखनेमें आती है, वैसी यहां नहीं है।

यहां हम तीन कोपेक (१०० कोपेक=१ रूबल) में ट्राम द्वारा चाहे जितनी दूर जा सकते हैं। ट्रामोंकी ड्राइवर और कंडक्टर प्रायः महिलाएं होती हैं। ट्रामोंमें चढ़ते हुए धक्का-मुक्की नहीं करनी पड़ती और न कंडक्टरोंका दुर्व्यवहार ही सहना पड़ता है। मुसाफिर ट्राममें आते चले जाते हैं—जिनके लिए जगह होती है वे बैठ जाते हैं, बाकी खड़े खड़े चले जाते हैं। जब ट्राम भर जाती है, तो उसका दरवाजा बंद हो जाता है। फिर चलती हुई गाड़ीमें कोई नहीं चढ़ सकता।

जल्दी जाना हो, तो बससे जा सकते हैं—ट्राली-बससे या बिना बिजलीके चलने वाली बससे। ट्राली-बसमें चार कोपेक और दूसरी बसमें पांच कोपेकमें हम चाहे जहां तक जा सकते हैं। कितनी ही बसोंमें कंडक्टर नहीं होते। एक कोनेमें पैसे डालनेका एक छोटा-सा बक्सा रखा रहता है और वहीं टिकटोंकी मशीन। मशीनको घुमानेसे टिकट निकल आता है। यदि बसमें कोई कंडक्टर हुई, तो वह एक स्थानपर बैठ जाती है और मुसाफिर उसके पास आकर टिकट खरीदते हैं। बसके ठहरनेपर लाउड-स्पीकरसे वह स्टेशनोंके नामोंकी घोषणा करती जाती है।

मेट्रो या जमीनके नीचे चलने वाली रेलगाड़ी यहांकी बड़ी दिलचस्प चीज है। यह सन् १९३५ में पहले मास्कोमें शुरू हुई थी। आजकल लेनिनग्राड और कीवमें भी चलती है। पांच कोपेकमें हम तमाम दिन रेलमें बैठकर घूम-फिर सकते हैं।

एक दिलचस्प बात और है। जैसे हम रेलका टिकट खरीदनेके लिए कतार लगाए खड़े रहते हैं, वैसा यहां नहीं होता। स्टेशनपर लगी हुई मशीनमें पांच कोपेकका सिक्का डाल दीजिए और बेखटके अंदर चले जाइए, टिकट लेनेकी जरूरत नहीं। लेकिन यदि मशीनमें बिना पैसा डाले या खोटा सिक्का डालकर अंदर जाना चाहेंगे, तो मशीन रोक देगी। और मशीनकी ईमानदारीको देखिए कि वह खोटे सिक्केको बाहर निकालकर फेंक देती है!

चूंकि ये रेलगाड़ियां जमीनके अंदर चलती हैं,

इसलिए तुम समझती होगी कि सीढ़ियां उतरकर रेलके प्लेटफार्मपर पहुंचना पड़ता होगा। लेकिन ऐसी बात नहीं। इसके लिए यहां बिजलीसे चलने वाले 'ऐस्केलेटर' या 'एलीवेटर' लगे रहते हैं, जो मिनिटोंमें पातालपुरीके प्लेटफार्मपर पहुंचा देते हैं।

स्टेशनोंके प्लेटफार्म बड़े साफ और सुंदर बने होते हैं और सर्दीके मौसममें बिजलीसे गर्म रहते हैं। यहां चिकने संगमरमरका फर्श है और दीवारोंपर सुंदर कारीगरी की हुई है। दोनों ओर

पिता के पत्र -२

क्रांतिकारी और गत विश्वयुद्धमें भाग लेने वाले वीरोंकी दीर्घकाय मूर्तियां बनी हुई हैं। साहित्यकारोंके नामोंपर अनेक स्टेशनोंके नाम हैं: एकका नाम है गोर्की। यहां गोर्कीकी एक सुंदर मूर्ति बनी है। पास ही पुस्तकोंकी दूकान है जिसपर अनेक विषयोंकी पुस्तकें बिक रही हैं। इस दूकानके सामने एक और दूकान है, लेकिन उसपर कोई विक्रेता नहीं है। जिसे जो पुस्तक या समाचारपत्र चाहिए, वह उसे ले ले और उसकी कीमत वहां रख दे।

प्लेटफार्मपर हम घूम रहे थे कि धू-धू करती हुई रेलगाड़ी आ पहुंची। रेलगाड़ीके ठहरते ही उसका स्वयं-चालित फाटक खुला। एक ओरसे मुसाफिर रेलके नीचे उतरे और दूसरी ओरसे उसमें सवार हुए। फाटक अपने आप बंद हो गया और रेलगाड़ी चल दी। इससे तुम समझ गई होगी कि रेलके दरवाजेके पास या पायदानपर खड़े होकर सफर करनेकी समस्या यहां नहीं है।

रेलमें सवार हो जानेके बाद जगह पानेके लिए भी आपा-धापी यहां नहीं है। जगह खाली पड़ी रहती है और लोग खड़े खड़े भी चले जाते हैं। अवश्य ही वृद्धजनों और शिशुवाली माताओं का ध्यान रखा जाता है।

टैक्सी भी यातायातका एक उत्तम साधन है। टैक्सीमें एक किलोमीटरके दस कोपेक देने पड़ते हैं। यहां टैक्सियोंमें बेतारका तार लगा रहता है, जिससे टेलीफोन द्वारा हम जहां चाहें, टैक्सी मंगा सकते हैं।

आज हम लोग पुस्तकोंकी एक दूकान देखने गए। तुम शायद न जानती हो कि जैसे यहां कोई प्राइवेट स्कूल नहीं, वैसे ही दूकान भी प्राइवेट नहीं है। सब दूकानें सरकारी हैं, इसलिए सबपर एक-सा भाव रहता है। पुस्तकगृहकी दो-मंजिली इमारत बड़ी शानदार है। अलग अलग स्थानोंपर अलग अलग विषयोंकी पुस्तकें रखी हुई हैं। कला, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, साहित्य, विज्ञान आदि विषयोंकी पुस्तकें देखनेमें आ रही हैं। विदेशी भाषा और साहित्यका विभाग अलग है। हिन्दी, उर्दू, तेलुगु आदि भारतीय भाषाओंके कोश रखे हुए हैं। अभी कुछ दिन पहले कबीर और कवि 'बच्चन' की पुस्तकें रूसीमें प्रकाशित हुई थीं, लेकिन शीघ्र ही ये पुस्तकें बिक जानेसे अप्राप्य हो गई। चित्रोंके बड़े बड़े पोस्टर बिक रहे हैं। एक पोस्टरपर मां और बालकका आकर्षक चित्र है। मां बालकको झूठ न बोलनेकी ताकीद कर रही है।

प्रकाशन-गृहोंका नियंत्रण सरकारके हाथमें रहता है। भिन्न भिन्न विषयोंकी पुस्तकोंके लिए यहां अलग अलग प्रकाशन-गृह हैं। यहां लाखोंकी संख्यामें पुस्तकें छपती हैं, इनमें तालस्ताय, पुश्किन, गोर्की, चेखव, मायाकोव्स्की, शोलोखोव, जैक लंडन, बाल्जाक, डिकेंस, शेक्सपियर और रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि लेखकोंकी रचनाएं मुख्य हैं। पुस्तकोंकी कीमत यहां अधिक नहीं होती। सामान्यतया २६ कोपेकसे लगाकर ५२ कोपेक तक पुस्तकोंकी कीमत रहती है।

तुम शायद न जानती हो कि यहांके लोग सर्कसके बड़े शौकीन होते हैं। बड़े बड़े शहरोंमें यहां सर्कसघर बने हुए हैं और जो नए शहर बसाए जा रहे हैं, उनमें सर्कसघरोंके बनानेकी योजना है। सर्कसोंमें शेर, तेंदुआ, चीता, घोड़ा, बंदर आदि जानवरों द्वारा जो खेल दिखाए जाते हैं, उन्हें देखकर हम आश्चर्यमुग्ध हो जाते हैं और उनसे आत्मीयता स्थापित करने लगते हैं।

सर्कसघर दर्शकोंसे खचाखच भरा हुआ है। लोग गैलरियोंमें बैठे हुए खेल शुरू होनेकी प्रतीक्षामें हैं। सबसे पहले सर्कसका मैनेजर मंचपर उपस्थित हुआ। उसने बोलना शुरू किया—"साहबान,

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

तेरह सितंबरकी शामको विनोद पाठशालासे छुट्टी हो जानेपर बाहर आया, तो गेटपर खबरोंवाले बड़े ब्लैक बोर्डपर युद्धकी कई नई खबरें लिखी हुई थीं :

—हवलदार अब्दुल हमीद पाकिस्तानके चार टैंक नष्ट कर देनेके बाद शहीद हो गया।

—पाकिस्तानने हवाई जहाजोंसे पंजाबके कई

कहानी

हिन्दुस्तान से सलाम-अलेकुम

स्थानोंपर छाताधारी सैनिक उतारे, लेकिन सबके सब पकड़ लिये गए।

—सिख रेजीमेंटने पाकिस्तानके एक और गांवपर कब्जा कर लिया।

—कलसे पाठशाला तब तकके लिए बंद रहेगी, जबतक युद्ध समाप्त नहीं हो जाता।

बहुतसे बच्चे बड़े जोशसे इन खबरोंको ऊंची आवाजमें पढ़ रहे थे, किंतु विनोद खबरें पढ़कर घरकी ओर चल पड़ा। उसका घर बहुत दूर था। रास्तेमें कई खेत पड़ते थे, क्योंकि पाठशाला शहरसे बिलकुल बाहर थी।

आजकल युद्धकी खबरें बहुत आती थीं। अखबारोंमें, रेडियोपर, हर आदमीकी जबानपर उन्हींकी चर्चा थी। दुश्मनके जहाज रोज उड़ानें भरते हुए बम गिरानेके लिए आते थे, परंतु हमारे नैट जहाज जब उनका पीछा करते, तो वे भाग खड़े होते।

जरनैली सड़कपर दिन-रात मिलिट्रीके काफिले गुजरते थे। विनोदका जी चाहता, वह भी खाकी वर्दी पहनकर और बंदूक उठाकर सेनासे जा मिले।

विनोदने लहलहाते खेतोंके साथ साथ एक पगडंडीपर चलते चलते सहसा ट्रैक्टर चलनेकी आवाज सुनी और साथमें किसीके गानेकी आवाज भी। यह आवाज उसके चाचाकी थी जो अपने खेतमें इसी तरह गाता हुआ ट्रैक्टर चलाया करता था। वह रोजाना इस समय पाठशालासे चाचाके पास आ जाता था। चाचा उसे ट्रैक्टरपर बिठाकर घर ले जाता था।

वह खेतोंमें उगी फसलोंमेंसे होता हुआ चाचाके पास जा पहुंचा। उसका चाचा उसे देखते ही खुशीसे चिल्ला उठा—"अरे आ गया, विनोद बेटा, मैं तेरी ही राह देख रहा था।"

उसका चाचा बहुत अच्छा था। था तो पूरा देहाती, पर कपड़े इत्यादि शहरके लोगों जैसे पहनता था—पतलून, बुशर्ट, गलेमें रूमाल और बहुत ही सुंदर मूंछें और सिरपर सजे हुए बाल। कोई भी उसे देखकर किसान नहीं कह सकता था। पर एक बात उसकी बिल्कुल देहातियों जैसी थी याने वह गुड़का बड़ा रसिया था। उसकी जेबें गुड़से सदा भरी ही रहतीं। अपने चाचासे विनोदको भी गुड़ खानेका चस्का लगा था।

जब विनोदको उसने बाजूसे पकड़कर अपने पास ट्रैक्टरपर चढ़ा लिया, तो विनोदने कहा, "चाचा, गुड़ नहीं खिलाओगे?"

उसका चाचा ट्रैक्टरका हैंडल घुमाते हुए बोला—"अरे, बेटा, तुम्हें गुड़ नहीं खिलाऊंगा, तो फिर क्या पाकिस्तानियोंको खिलाऊंगा?"

विनोदने चाचाके हाथसे गुड़ लेकर पूछा, "चाचा, गुड़ पाकिस्तानियोंको क्यों नहीं खिलाओगे? क्या पाकिस्तानी बहुत बुरे होते हैं?"

"हां, बहुत बुरे होते हैं," उसका चाचा गरम होकर बोला। "देखते नहीं, वे रोज ही हमारे खेतों और मकानोंपर बम बरसाने आ जाते हैं। हमने कितने परिश्रमसे ये फसलें उगाई हैं। ये जल गईं, तो फिर लोग क्या खाकर जिएंगे?"

"पर, चाचा, गुड़ खाकर तो आदमी बहुत मीठा माने बहुत भला हो जाता है न, जैसे तुम बहुत भले चाचा हो।"

"और नहीं तो क्या?" उसके चाचाकी आंखें गर्वसे चमक उठीं और गरदन भी तन गई।

विनोदने कुछ सोचते हुए कहा, "तो फिर हम लोग पाकिस्तानियोंको गुड़ खिला खिलाकर भले आदमी क्यों नहीं बना लेते?"

चाचा बोला, "बहुत गुड़ खिलाया है हमने उनको। पर, वे कड़वेके कड़वे ही रहे।"

इस उत्तरसे विनोदकी संतुष्टि नहीं हुई। वह फिर कुछ सोचकर बोला, "पर, चाचा, अगर हमें कोई ऐसा पाकिस्तानी मिल जाए, जो, गुड़ खाकर भला बन सकता हो, तो क्या तुम उसे गुड़ नहीं दोगे?"

उसके चाचाने उसकी पीठपर प्यारसे जोरकी एक थौल जमा दी और कहा, "तुम बकबक बहुत करते हो। इस वक्त हमें कौनसा भला पाकिस्तानी मिल सकता है?"

"मैं कहता हूं, अगर मिल जाए तो?" विनोदने ज़िद-सी पकड़ ली।

"अच्छा अच्छा, मिल जाएगा, तो उसे गुड़ खिला दूंगा। पहले एक बात बताओ, तुम मुझे चाचा क्यों कहते हो?"

विनोदने हैरान होकर उत्तर दिया, "क्योंकि तुम मेरे चाचा ही तो हो।"

उसके चाचाने कहा, "नहीं, भई, तुम जब अपने मां-बापको डैडी-मम्मी कह सकते हो, तो मुझे भी अंकल कह-कर पुकारनेमें तुम्हारा क्या बिगड़ जाएगा?"

यह सुनकर विनोद हंस पड़ा। बोला, "असल बात यह है, गुड़ खाने वाले चाचाको 'चाचा' ही कहना जरा ठीक लगता है। जो लोग 'अंकल' होते हैं, वे खुद भी टाफियां खाते हैं और दूसरोंको भी खिलाया करते हैं!"

उसका चाचा खिसिया गया। बोला, "अच्छा अच्छा, मैं भी आगेसे तुम्हें टाफियां खिलानेका वादा करता हूं, तब तो मुझे अंकल कहा करोगे ना?"

विनोदने ताली बजाकर कहा, "तब तो इसी वक्त-से अंकल हो गए। अच्छा, अंकल, इसी बातपर एक बार फिर गुड़ खिला दो।"

अंकलने प्रसन्न होकर उसे गुड़ दे दिया, लेकिन उसी क्षण विनोदकी नजर सहसा खेतमें छिपते हुए एक लड़के-पर जा टिकी। वह चकित-सा होकर खेतकी ओर देखने लगा।

उसके अंकलने भी हैरान होकर पूछा, "क्या बात है, विनोद? तुम किसको देख रहे हो?"

विनोदने कहा, "मुझे जल्दीसे नीचे उतार दो अंकल, अभी बताता हूं।"

— रामलाल

विनोद अंकलकी सहायता लेनेसे पहले ही कूदकर हल चलाई हुई नर्म नर्म धरतीपर कूद पड़ा और भागकर खेतके भीतर जा घुसा। थोड़ी ही देरके बाद एक लड़के-को बाजूसे पकड़कर बाहर ले आया और लगा उससे पूछने: "तुम कौन हो? हमें देखकर छिप क्यों गए थे?"

लड़का डरा हुआ-सा चुप खड़ा रहा। उसके कपड़ों और सिरके बालों और हाथ-पांव तथा चेहरेपर मिट्टी लगी हुई थी। वह बहुत दुर्बल भी दिखता था, जैसे कई रोजका भूखा-प्यासा हो।

"बताओ न, तुम कौन हो? सच सच बता दोगे, तो तुम्हें मारूंगा भी नहीं।"

लड़केने डरते डरते कहा, "मेरा नाम अली है। डोगराई गांवका रहने वाला हूं, जो उधर बहुतसे खेतों-के पीछे है।"

"डोगराईके?" विनोदने हैरान होकर पूछा। "डोग-राई तो पाकिस्तानमें है। क्या तुम पाकिस्तानी हो?"

प्रशान्त कुमार दिनकर

खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता के लिए चतुर्मुखी अभियान.... उसे सफल बनाइए

महाराष्ट्र चुनौति का सामना करता है

- अधिक उत्पादनक्षम मिश्रित जातियों के बीजों का उपयोग
- खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत के क्षेत्र के लिए सिंचाई जल का मुफ्त उपयोग और गन्ने के आधीन के क्षेत्र में कमी
- गेहूं और धान की दो फसलों का उत्पादन
- संपूर्ण मौसमभर में किसानों को उचित मूल्यों का आश्वासन।

प्रसिद्धी संचालक, महाराष्ट्र शासन, बंबई

अलीने कहा, "हां, हमारे गांवपर अब तुम्हारी फौजका कब्जा है। मेरे अब्बा और अम्मी मांटगुमरी भाग गए हैं। मैं पीछे छूट गया था। तबसे जान बचाता फिर रहा हूं कि कहीं कोई मुझे मार न डाले।"

विनोदके चेहरेपर हमदर्दी उभर आई। उसने कहा, "घबराओ मत। यहां तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। पहले यह बताओ, भूख लगी है क्या?"

अलीने हांके संकेतमें सिर हिलाया, तो विनोदने पलटकर अपने अंकलकी ओर देखा, जो अपने ट्रैक्टरपर झुका हुआ दोनोंकी बातें सुन रहा था। उसने कहा, "अंकल, देखो, यह बिचारा कितना भूखा है। इसे खाने को गुड़ दो, ना।"

उसका अंकल मुस्कराता हुआ ट्रैक्टरसे नीचे उतर आया। जेबमेंसे बहुत-सा गुड़ निकालकर अलीको देते हुए बोला, "लो खाओ। चिंता मत करो। यहां तुम्हें कोई नहीं मारेगा। विनोद, इसे अपने घर ले चलते हैं। तुम दोनों ट्रैक्टरपर आ जाओ।"

विनोद और अली दोनोंको ट्रैक्टरपर बिठाकर वह उन्हें घरकी तरफ ले चला। रास्तेमें कई गलियां और बाजार पड़े। ट्रैक्टरकी घर्र-घर्रकी ऊंची आवाज सुनकर कई बच्चे अपने अपने घरोंसे निकल आए। वे सब बच्चे विनोद और उसके चाचाको जानते थे। विनोदके चाचाने उन सबको भी ट्रैक्टरपर चढ़ा लिया। विनोदने उन सबके साथ अलीकी दोस्ती करा दी। वे सब शोर मचाते हुए घर पहुंचे, तो दरवाजेपर विनोदके एक बहुत ही सुंदर कुत्तेने, जिसका नाम बड्डी था, खुशीसे 'भौं-भौं' करके उनका स्वागत किया। विनोदने बड्डीके साथ भी अलीकी दोस्ती करा दी। बड्डीने अलीका पैर चाटा और अलीने प्यारसे उसकी पीठपर हाथ फेरा।

विनोदके मम्मी और डैडी भी अलीको देखकर प्रसन्न हुए। उन्होंने जिला अधिकारीको फोन करके उसे अपने पास रखनेकी आज्ञा ले ली।

अलीने नहा-धोकर विनोदके अच्छे अच्छे कपड़े पहन लिए, तो वह बहुत खूबसूरत दिखाई दिया और सब लोगोंको अच्छा लगा। उसने अपने गांवके बारेमें बहुत-सी बातें बताईं। उसके अब्बा और अम्मी खेतोंमें काम करते थे। उनका एक छोटा-सा कच्चा मकान था, जिसपर मोर्चा बनानेके लिए पहले पाकिस्तानी फौजने कब्जा कर लिया था, फिर वहां भारतीय सेनाने पहुंचकर अपना अधिकार किया था। उसके स्कूलमें और वहांकी एक छोटी-सी मस्जिदमें भी पाकिस्तानी फौजने लड़ाईका सामान जमा कर रखा था, जिसके कारण बच्चोंकी पढ़ाई और नमाज आदि सब रुक गई थी।

दूसरे दिन सुबह होते ही विनोद अली और दूसरे मित्रोंको साथ लेकर घरसे बाहर निकल गया। उनके साथ बड्डी भी था, जो सबके आगे आगे चल रहा था। उन्होंने अलीको अपना नगर दिखाया। नगरकी अच्छी अच्छी जगहें दिखाईं। अपना स्कूल दिखाया। वहां और भी कई स्कूल थे। वे अब लड़ाईकी वजहसे बंद पड़े थे। अली अब बहुत ही प्रसन्न दिखता था। उसकी उदासी दूर हो गई थी।

इस प्रकार घूमते-घामते वे सब खेतोंकी ओर निकल गए। वहां प्रतिदिनकी तरह विनोदका चाचा ट्रैक्टरसे हल चला रहा था। विनोदने उसे 'अंकल' कहकर पुकारा, तो उसकी बाछें खिल गईं। उसने खुश होकर अपने वादेके अनुसार जेबसे टाफियां निकालकर सब बच्चोंमें बांट दीं और उन्हें ट्रैक्टरपर चढ़ाकर घरकी ओर ले चला। उसने बड्डीको भी ट्रैक्टरपर बिठा लिया।

●

जब वे घर पहुंचे, तो विनोदके डैडीके पास बाहरके कमरेमें रेडियो स्टेशनके कुछ अधिकारी आए हुए थे। वे अलीका कोई संदेश रेडियो द्वारा उसके मां-बाप तक पहुंचाना चाहते थे। पहले तो अली कुछ घबराया, परंतु जब उसे विश्वास हो गया कि उसके संदेशसे उसके मां-बापको भी संतोष मिलेगा और लड़ाईके बाद वे उसे आकर ले भी जाएंगे, तो वह तैयार हो गया।

उन्होंने टेप-रिकार्डर मशीन चलाकर माइक अलीके हाथमें दे दिया। उसके बाद उसने माइकको मुंहके पास ले जाकर कहा—"मेरे प्यारे अब्बा और अम्मी, सलाम-अलेकुम। मैं अली हूं, आपका बेटा। मैं आपको हिन्दुस्तानसे सलाम-अलेकुम कह रहा हूं। मैं बिलकुल ठीक हूं। बहुत ही अच्छे कपड़े पहने हुए हूं। एक बहुत अच्छी बात यह भी सुनिए, यहां मेरा एक नया दोस्त बना है—विनोद। विनोदने अपने और भी कई दोस्तोंसे मुझे मिला दिया है। इस वक्त वे सब मेरे सामने खड़े हंस रहे हैं। उनके नाम बताऊं? सुनिए, उनके नाम हैं—विनोद, जो पहले ही बता चुका हूं और आनंद, दीदारसिंह, बुलंद इकबाल बख्शी, मंगलसिंह, जावेद, गनी, कालिया और सदर्शन—जो पानी पीने चला गया है। और हां, एक और दोस्त बड्डी भी है। बड्डी, समझे गए ना? जैसा हमारे घरमें एक मोटू था ना। यह बड्डी उससे भी अच्छा है। अच्छा और सुनिए, यहां मैंने कई स्कूल देखे हैं। लेकिन सबके सब बंद पड़े हैं, लड़ाईकी वजह से। इन स्कूलोंमें बिजली भी लगी हुई है। पंखे भी हैं और हां, रेडियो भी। यहां खेतों में ट्रैक्टरोंसे काम होता है। कल और आज मैंने ट्रैक्टरपर सैरकी है। विनोदके चाचाका अपना ट्रैक्टर है। चाचा बहुत अच्छा है। हमें गुड़ खिलाता है और टाफियां देता है। अच्छा, अब मैं और कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन एक जरूरी बात तो कहना भूल ही गया। आप रावलपिंडी चले जाइए। वहां हमारे तबरे-पाकिस्तान रहते हैं। उन्हें बताना कि अली हिन्दुस्तानमें है। वहींसे उसने आपको सलाम-अलेकुम भी कहा है और यह भी कहा है कि वह हिन्दुस्तानके साथ लड़ाई फौरन बंदकर दें। यहांके मेरे सारे दोस्त लड़ाईके सख्त खिलाफ हैं। लड़ाईके कारण हम सबके स्कूल बंद हो गए हैं। हम स्कूल नहीं जाएंगे, तो इम्तिहानमें पास कैसे हो पाएंगे? और लायक और काबिल कैसे बनेंगे? लड़ाई बंद हो जानेपर ही मैं आपके पास आ सकूंगा। बस और कुछ नहीं कहूंगा, अच्छा रावलपिंडी जरूर जाइएगा। बस, यह आखिरी बात थी। सलाम-अलेकुम।"

●

राष्ट्रपति भवन का मनोरम उद्यान

भारतकी राजधानी नई दिल्लीमें स्थित राष्ट्रपति भवनके उद्यानकी गणना देशके श्रेष्ठ उद्यानोंमें की जाती है। पूरा उद्यान काफी विस्तृत क्षेत्रमें फैला हुआ है। इस उद्यानको विविध फूल-पौधोंकी अनेक बड़ी बड़ी चौकोर क्यारियोंमें कलात्मक ढंगसे बांटा गया है और इन बड़ी क्यारियों-को अनेक छोटी छोटी चौकोर क्यारियोंमें विभाजित करके उनकी चारों ओर खूबसूरत रास्ते बनाए गए हैं। इनके अलावा यत्र-तत्र अनेक फव्वारे भी हैं, जिनसे बराबर जल-धाराएं निकलती रहती हैं। मुख्य उद्यानके पास ही एक गोलाकार किंतु छोटा उद्यान भी है, जिसके बीचमें स्थित गोलाकार तालाबकी चारों ओर खिले रंग-बिरंगे विविध प्रकारके फूलोंकी मनोरम छटा पर्यटकों एवं दर्शकोंको निरंतर आकर्षित करती रहती है।

(छाया : विद्याव्रत)

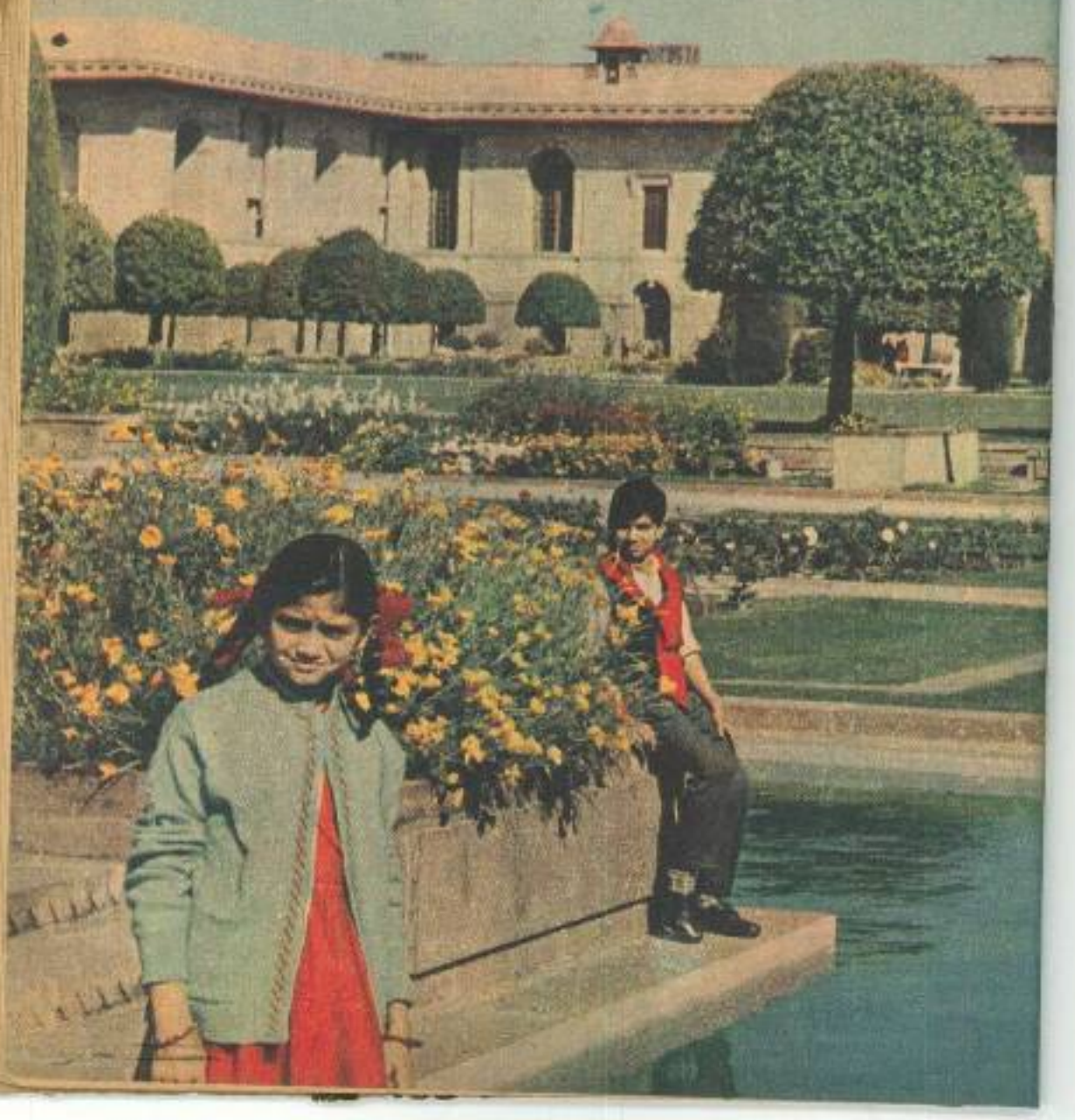

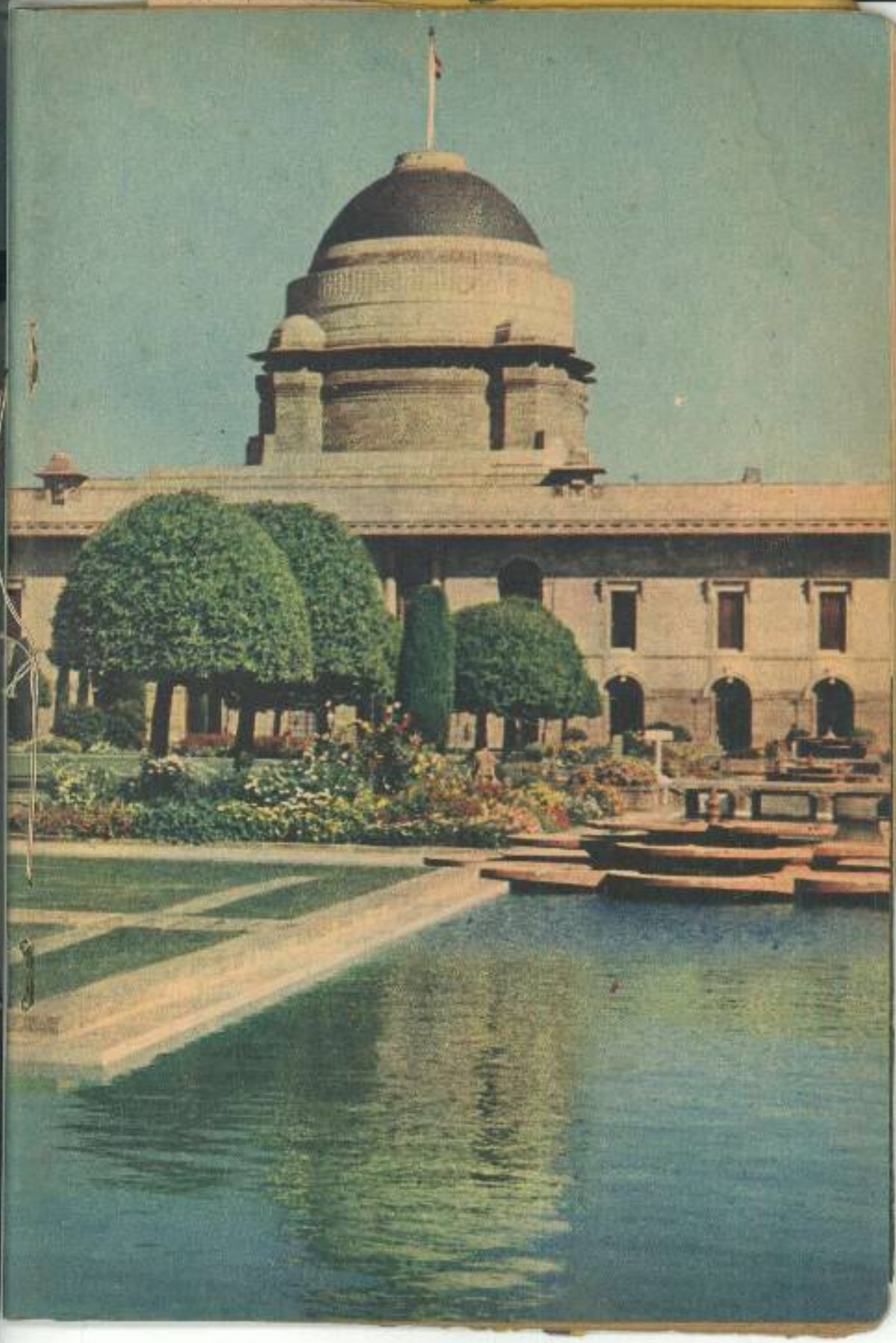

बुद्धूमल के कारनामे (पृष्ठ २३ से आगे)

संजोकर रख लिये थे।

हरागांवकी सभी बौनी लड़कियां उन्हें बिदा देने गांवसे बाहर तक आईं। सबकी आंखोंमें आंसू थे और अनेक तो खूब जोर जोरसे रो रही थीं। सुबोधने उन्हें आश्वासन दिया कि किसी दिन फिर वे गुब्बारा बनाएंगे और उनसे मिलने आएंगे।

लड़कोंने चलना जारी रखा। "बिदा, बिदा!" लड़कियां चिल्लाईं। अन्नपुष्पाने चुपचाप हाथ हिलाया। जब वे इतनी दूर पहुंच गए कि लड़कियोंकी आवाजें उन तक पहुंचनी मुश्किल हो गईं, तो अन्नपुष्पा चिल्लाई :

"बुद्धूमल! बुद्धूमल!"

सुनकर बुद्धूमलने घूमकर देखा, तो अन्नपुष्पाने चिल्लाकर कहा : "पत्र लिखना न भूलना।"

बुद्धूमलने गरदन हिलाकर हामी भरी और अपना हाथ हिलाया। यह देखकर अन्नपुष्पाकी बाछें खिल गईं और उसने हर्षके साथ कहा, "उसने मेरी बात सुन ली है!"

आखिरकार जाने वाले जब नामालूम धब्बेसे दिखाई पड़ने लगे, तो सभी लड़कियां भारी मनके साथ वापस हरागांव लौट गईं।

सुबोध और उसके मित्र कई दिनों तक जंगल जंगल चलते रहे। अंतमें वे एक जानी-पहचानी भूमिपर आ गए। एक दिन एक पहाड़ीकी चोटीपर जा चढ़े और वहांसे उन्होंने फूलनगरकी वह सुहावनी-सलोनी आकृति देखी, जो उनके नेत्रोंके सम्मुख दूर दूर तक फैली पड़ी थी।

गरमियोंके अंतिम दिन थे और सभी तरहके फूल जहां-तहां खिले पड़े थे। गेंदा, चमेली, गुलाब, सूरजमुखी, और न जाने क्या क्या उस भूमिपर बिखरा पड़ा था। दूर दूर तक खेत लहरा रहे थे। यह देखकर सुबोध और उसके मित्रोंने एक-दूसरेको खुशीके मारे छातीसे लगा लिया और कूदते-फांदते शीघ्र ही वे सब फूलनगरकी सड़कोंपर आ गए।

उनके बौने मित्र पलक मारते ही हजारोंकी संख्यामें अपने अपने घरोंसे निकल आए और अपने खोजी साथियोंको कमरसे उठा उठाकर झूमने लगे। उनकी प्रसन्नताका पारावार न था। सुबोध और उसके साथी धूपसे थोड़ा काले पड़ गए थे। लेकिन जब घरपर ही रह जाने वाले बौने मित्रोंने उन्हें पहचाना, तो उन्हें कंधोंपर उठा लिया। सारे फूलनगरमें बिजलीकी तेजीसे खबर फैल गई कि सुबोध और उसके साथी वापस लौट आए हैं। और जब वे अपनी गलीमें आए, तो लोगोंने उनके पांव जमीनपर नहीं पड़ने दिए। लड़कियोंने उनके रास्तेमें फूलोंकी पंखुड़ियां बिछा दीं।

सहसा ही एक छोटा-सा कुत्ता कहींसे दौड़ा और निशानाचंदकी चारों तरफ उछलने-कूदने-भौंकने लगा।

"बिन्दु!" खुशीके मारे निशानाचंद चिल्लाया, "अरे, अरे देखो, यह तो मेरा बिन्दु ही है रे!"

पड़ोसियोंने बताया कि गुब्बारा उड़नेके कुछ दिनों बाद ही बिन्दु लौटकर घर आ गया था और उन्होंने समझ लिया था कि उनके सभी साथी कालके गालमें समा गए हैं। उन्होंने अपने मित्रोंको फिर देखनेकी आशा ही त्याग दी थी।

निशानाचंदने बिन्दुको अपनी गोदीमें उठाकर चूमा और उसके साथ बातें करने लगा। गलीके अंतमें बौनोंका एक दूसरा समूह आया, जिसके साथ कवि शलजम उपनाम सरगम थे। सबमें उत्साह फैल गया कि अब जरूर कोई कविता होगी। एक बौनेने एक ड्रम उठाकर सड़कके बीच उल्टा रख दिया और कविजी उसपर खड़े हो गए। कुछ देर उन्होंने मूड बनाया और सोचते रहे—फिर एक आशु-कविता उन्होंने रची :

वे उड़ गए गुब्बारेमें,
क्या कहूं उनके बारे में,
मैं ढूंढा किया उनको सारे में,
पर मिले नहीं वे चांद-तारेमें,
मिलनेकी ललक होती सिर्फ पारेम,
आज वह मिल रही हमारेमें —
जिन्हें सपनोंमें ढूंढते थे हम—
आएं वो, मगर नहीं गुब्बारेमें!

अब क्या था—लोगोंने कविजीको कंधोंपर उठा लिया। ऐसा लगने लगा कि वह भी खोजियोंके दलके ही एक सदस्य थे। लड़कियोंने उनपर

फूल ही फूल बरसा दिए । चारों ओर उनकी कविताकी भूरि भूरि प्रशंसा होने लगी ।

और बुद्धूमल व बोरेरामका मिलन तो किसीसे देखा तक न गया—सबके सब बोरेरामसे जलने लगे, क्योंकि बुद्धूमल भी अब छोटे-मोटे हीरो नहीं रह गए थे । बोरेरामने उन्हें बोरेकी तरह उठा लिया और नाचने लगा । सबने एक दूसरेको अपने अपने हवाल बताए । सुबोधने पाइपों, मशीनों, फलों आदिके अपने हरागांव वाले अनुभव सुनाए, तो शरबतीलालने तरबूजका बीज हाथ नचा नचाकर दिखाया और गोलाराम-ने हरागांवकी मिठाइयोंकी तारीफ की ।

सबसे बड़ी बात यह हुई कि फूलनगरकी लड़कियां चकित रह गईं, जब उन्होंने सुना कि बुद्धूमल अब उतने बुद्धू नहीं रह गए हैं । वह लड़कियोंके लिए बड़े कृपालु हो गए हैं और उनके साथ खेलनेमें भी अब उन्हें कोई हिचक नहीं रह गई है । यहां तक कि लड़कियोंको चिढ़ाने वालोंके वह अब कान ऐंठने लगे हैं । इससे लड़कियोंमें उनकी जो ख्याति फैली, तो दूसरे लड़कोंमें भी देखा-देखी लड़कियों-की सहानुभूति प्राप्त करनेकी होड़ लग गई और कुछ ही दिनोंमें लड़कियां खेल-कूद, काम-धाम सबमें लड़कोंके बराबर हिस्सा लेने लगीं । इस बीच सुबोधने नदीपर पुल बनाने, फलोंके बीज बोने, हर गलीमें एक फव्वारा लगाने और पाइप-लाइन बिछानेका काम जोड़ दिया और सारा फूलनगर सुबहसे दोपहर तक इन्हीं कामोंमें लगा रहने लगा । दोपहर बाद सब इकट्ठे होते और खेल-कूद करते—मगर—

मगर बेचारे बुद्धूमलके भाग्यमें यह खेल-कूद कहां बदा था । वह पुस्तक-पोथी हाथमें लिये किसी पेड़की छायामें या किसी टीलेपर बैठे किरमकांटे खींच रहे होते, क्योंकि उन्हें अपने वादेके मुताबिक अन्नपुष्पाको अपने हाथोंसे एक पत्र जो लिखना था । धीरे धीरे किरमकांटोंके स्थानपर उनके हाथसे सुंदर अक्षर बनने लगे और उन्हें विश्वास हो चला कि वह मनचाही मुराद पा जाएंगे ।

धीरे धीरे फूलनगर कुछ ही दिनोंमें हरा-गांवसे भी अधिक उन्नत हो गया । (समाप्त)

(रूपांतरकार : विनोदकुमार)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"यार, यह बताओ, आज तुम किस खुशीमें इतने बढ़िया होटलमें मुझे खाना खिलाने लाए हो?"

"बस, इसी खुशीमें कि मेरी जेबमें आज खाने-पीनेका बिल चुकानेके लिए एक भी पैसा नहीं है!"

स्कूली लड़कों के लिये विशेष ढंग से परिकल्पित – बिन्नी का डी.३८

दाम में कम पर देखने में शानदार। चाहे जैसे भी बरतिये, जैसे का तैसा ही बना रहेगा। यह मरसिराइज्ड होता है। बार बार धोने पर भी चमक और रंग में कोई फर्क नहीं आता। विभिन्न रंगों में से अपनी मन-पसन्द कोई भी चुन लीजिये।

परदे तथा गद्दे के ढकन के लिये भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

बिन्नी – कपड़ों में एक मशहूर नाम

दि बंगलोर वूलन, कॉटन ऐन्ड सिल्क मिल्स कं० लि०, ब्यूशरम रोड, बंगलोर-२३; बिन्नी ऐन्ड कं० लि०, मद्रास की सहायता प्राप्त

IWT/BY 3613

चीते के शरीर पर काली धारियां क्यों?

यह उस समयकी कहानी है, जब जानवर भी मनुष्यकी तरह बातें करते थे। एक किसानने दोपहरका काम समाप्त किया और पेड़की छायामें भोजन करने बैठा। उससे थोड़ी ही दूर घासपर एक भैंसा बैठा जुगाली कर रहा था।

अचानक भैंसा खड़ा हो गया। थोड़ी देरके बाद एक चीता, जो पहाड़ों और जंगलोंका सबसे शक्तिशाली पशु माना जाता है, वृक्षोंके झुरमुटसे निकलकर भैंसेकी तरफ बढ़ा। भैंसा लड़नेके लिए तैयार हो गया, परंतु चीतेने कहा—

"मैं इस समय तुम्हारा दुश्मन बनकर नहीं आया। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। मैं हर रोज वृक्षोंके झुरमुटके पीछे छिपकर तुम्हें मेहनत करते देखता हूं और मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि कैसे यह छोटा-सा शक्तिहीन मनुष्य तुमसे काम लेता है जबकि तुम उससे दस गुना शक्तिशाली हो।"

"वास्तवमें मैं कुछ नहीं जानता," बेढंगे भैंसेने उत्तर दिया। "जाने क्यों मैं अपनेको उससे स्वतंत्र नहीं कर पाता। मैं तो केवल यह जानता हूं कि उसके पास अक्ल नामका कोई तावीज है।"

"मैं मनुष्यसे यह सुंदर वस्तु जरूर मांगूंगा," चीतेने कहा, "यदि वह मेरे पास हो, तो मैं बहुत शक्तिशाली हो जाऊंगा और मुझे शिकार मारनेमें आसानी होगी।"

"हां, यह ठीक है। तुम मनुष्यसे जरूर मांगो," भैंसेने सलाह दी। चीतेने मनमें निश्चय किया और मनुष्यकी ओर धीरे धीरे बढ़ा और प्रेमसे बोला, "हे मनुष्य, मैंने सुना है कि तुम्हारे पास अक्ल नामकी एक वस्तु है और केवल उसीकी सहायतासे तुम जानवरोंपर राज्य करते हो। क्या तुम मुझे थोड़ी अक्ल दोगे? वह मेरे लिए बहुत अमूल्य होगी।"

"माफ करना, श्रीमान," किसानने उत्तर दिया, "मैं अक्लको घरमें छोड़ आया हूं। कोई भी व्यक्ति काम करते समय उसको अपने साथ नहीं रखता। फिर मेरे पास इतनी थोड़ी अक्ल है कि उसमेंसे तुम्हें थोड़ी-सी देना भी मुमकिन नहीं है।"

परंतु चीतेके अधिक दबाव डालनेपर किसान उसको थोड़ी-सी अक्ल देनेको तैयार हो गया। और बोला, "अच्छा, तुम इंतजार करो, मैं अभी अक्ल लेकर आता हूं।"

थोड़ी दूर जानेके पश्चात् किसान कुछ सोचता हुआ लौट आया और कहने लगा, "मेरे मनमें शंका है कि कहीं तुम मेरे भैंसेको अकेला पाकर खा न जाओ। यदि इसको कुछ हो गया, तो मैं भूखों मर जाऊंगा।"

चीतेने वायदा किया कि वह भैंसेको नहीं मारेगा। परंतु किसानको विश्वास न हुआ और उसने चीतेसे कहा, "यदि तुम बुरा न मानो, तो मैं तुम्हें वृक्षसे बांध दूं। फिर मैं अक्ल लेने आरामसे जा सकूंगा।"

चीतेके मनमें अक्ल लेनेकी इतनी तीव्र लालसा थी कि वह इसके लिए भी तैयार हो गया। किसानने उसको वृक्षके साथ एक मोटी रस्सीसे बांध दिया और घरकी ओर जल्दीसे भागा।

थोड़ी देर पश्चात् किसान सूखा फूस लेकर लौटा और उसको चीतेके चारों ओर बिछा दिया और फिर उसमें आग लगा दी।

"यही है मेरी अक्ल!" किसानने चिल्लाकर चीतेसे कहा।

चीता पीड़ा और गुस्सेसे इतनी जोरसे दहाड़ने लगा कि जंगल कांप उठा। परंतु किसान असहाय चीतेको देखकर हंसता रहा।

जब आगने उन रस्सियोंको जला दिया, जिनसे चीता बंधा हुआ था, तो चीतेने पूरी शक्ति लगाकर अपनेको छुड़ा लिया और चीखता-चिल्लाता जंगलमें भाग गया। तभीसे चीतेके शरीरपर लंबी लंबी काली धारियां पड़ गई हैं।

(एक विख्यातनामी लोककथाके आधारपर)
(प्रस्तुतकर्ता : सुबोधकुमार)

('पराग' के पिछले दो अंकोंमें तुम लान टेनिसकी प्रारंभिक बातें तथा खेलके तरीकोंके बारेमें जानकारी हासिल कर चुके हो, लो अब टेनिसके स्ट्रोकोंके बारेमें पढ़ो।)

(3)

जैसा कि हमने तुम्हें पिछले अंकमें बताया था, टेनिसके विभिन्न स्ट्रोकोंका अभ्यास किए बिना तुम टेनिसके अच्छे खिलाड़ी नहीं बन सकते।

टेनिसका प्रमुख स्ट्रोक है 'फोरहैंड ड्राइव', जिसमें बांहको बढ़ाकर, सही दिशामें और सही वक्तपर गेंदपर जोरदार प्रहार किया जाता है। यह स्ट्रोक चूंकि बड़ा आसान और स्वाभाविक है, इसलिए नए खिलाड़ी इसका प्रयोग करना सबसे पहले सीख जाते हैं। 'बैकहैंड ड्राइव', जिसमें हमारे देशके प्रख्यात खिलाड़ी कृष्णन अत्यंत प्रवीण हैं, में बांह शरीरके सामने, कुहनियां पीछे और हाथोंका पिछला भाग गेंदकी ओर होता है।

'डिफेंसिव लॉब' नामके स्ट्रोकमें गेंदको हवामें काफी ऊंचाईपर काफी दूरी तक सामनेकी 'बेसलाइन' के पास तक प्रहार किया जाता है। एक टेनिस विशेषज्ञका कहना है: 'स्वाभाविक खेल खेलने वाले और गुणी खिलाड़ीकी एक पहचान यह है कि वह हाफ वॉली अच्छी तरह खेल सकता हो।' पर, घासके मैदानमें इस स्ट्रोकपर काबू रखना बहुत मुश्किल हो जाता है।

—हरिमोहन—

'ड्राप शाट' एक नाजुक शाट है, जो कलाइयोंके सहारे खेला जाता है। 'चॉप' में ऊंचा टप्पा खाती हुई गेंदपर निचली दिशाके 'कट' से तिरछा प्रहार किया जाता है। कटमें गेंदपर नीचेकी ओरसे हल्का प्रहार किया जाता है। 'कट' में गेंद फीदरमें रैकेटको ऊर्ध्वाकार रखकर तथा घुटनोंको मोड़कर 'ड्राप शाट' खेला जाता है।

हवामें खेले गए स्ट्रोकोंमें प्रमुख हैं 'स्लाक वॉली' जिसमें गेंदपर सोद्देश्य बढ़ी हुई मुट्ठीसे प्रहार किया जाता है। 'ड्राइव वॉली' में हाथोंको सीधा कर, गेंदको सीधा पीटा जाता है। 'लॉब वॉली' में रैकेटको गतिहीन करके, गेंदको ऊंचा पहुंचाया जाता है। 'लो वॉली' में भी रैकेटको गतिहीन करके गेंदको ऊंचा पहुंचाया जाता है लेकिन गेंदको काफी नीचेसे मारा जाता है। ऐसा करते समय घुटने झुके हुए रहते हैं और कलाइयां गेंदके सामने रहती हैं। 'स्टाप वॉली' में गेंदकी तेजीको रैकेटसे रोकनेकी कोशिश की जाती है। 'स्मैश' को बिल्कुल सर्विसकी

लान टेनिस संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : 'फ्लेट ड्राइव' और 'डीप ड्राइव' में क्या अंतर है?

जवाब : 'फ्लेट ड्राइव' में गेंदको कोई टप्पा नहीं खिलाया जाता। 'डीप ड्राइव' में गेंदको बेस लाइन के पास 'पिच' कराया जाता है।

सवाल : 'नेट कार्ड स्ट्रोक' क्या होता है?

जवाब : वह स्ट्रोक, जिसमें गेंदकी उड़ान नेटके ऊपरी सिरेसे टकराकर रुक जाती है।

सवाल : स्ट्रोकोंमें 'टच' का क्या महत्व है?

जवाब : रैकेटको एकसी गति और शैलीके साथ घुमाते हुए, ठीक समयपर उससे गेंदको प्रहार करना 'टच' कहलाता है। टचमें प्रवीण होनेके लिए, दीर्घ अभ्यास और समयकी आवश्यकता है, पर इसके बिना न अच्छा स्ट्रोक आदतन लग सकता है, और न खिलाड़ीको खेलमें असली आनंद ही आ सकता है।

सवाल : लान टेनिसमें फुटवर्कका क्या नियम है?

जवाब : लान टेनिसका प्रत्येक खिलाड़ी फुटवर्कके अपने नियम निर्धारित कर लेता है। पर, तरीके अलग अलग होते हुए भी, फुटवर्कमें दक्ष खिलाड़ी स्ट्रोकके समय, गेंदसे ठीक फासलेपर ही रहता है। अच्छे फुटवर्कवाला खिलाड़ी जल्दीसे जल्दी उस स्थितिमें पहुंच जाता है, जहांसे वह गेंदपर सही दिशामें और सही तेजीके साथ, आसानीसे प्रहार कर सके।

भांति खेला जाता है अर्थात् गेंदके ऊपरी सिरेपर कलाइयोंके जोरसे सशक्त प्रहार किया जाता है।

गेंदमें 'टाप स्पिन' लानेके लिए गेंदके दाहिने सिरेको ऊपरी दिशामें मारना चाहिए। 'अंडर स्पिन' के लिए गेंदके निचले भागको 'चॉप' किया जाता है। 'स्लाइस' में गेंदको तिरछी और नीची दिशामें मारा जाता है। गेंदमें इच्छित 'स्पिन' लानेके लिए रैकेटको दृढ़तासे पकड़ना जरूरी है।

'स्मैश' के समय खिलाड़ीके पांवों और हाथोंकी स्थितिका चित्र

डबल्स प्रतियोगितामें सफलता पानेके लिए आवश्यक है कि एक साथ खेलने वाले दोनों खिलाड़ी खेलसे पहले, खेलके अपने तरीकोंको भली भांति निश्चित कर लें, ताकि खेलते समय मतभेद और झगड़ेकी नौबत न आ जाए। सर्विस लेते समय, दोनों खिलाड़ी एक लाइनमें खड़े रहें तो और भी अच्छा। हर बॉलीके बाद उन्हें नेटके ऊपर करीब आते रहना चाहिए और गेंदको नीचा रखनेकी कोशिश करनी चाहिए। यह तो हुई लान टेनिस संबंधी स्ट्रोकोंकी जानकारी। अब अगले अंकमें पढ़ना भारतमें टेनिसके जन्म और प्रसारकी कहानी।

(क्रमशः)

नन्हे कार्टून

पिताजी चिल्लाए: "पप्पू, आधा घंटा हो गया, तुम्हें नमकदानीमें नमक डालकर लानेको कहा था।"

"नमकदानीके छेदोंमेंसे एक एक दाना अंदर डालनेमें समय तो लगेगा ही!" पप्पूका जवाब था।

•

पप्पू बस-स्टैंडपर उदास खड़ा था। एक महिलाको देखकर वह उसकी ओर गया और बोला, "क्या आप मुझे एक रुपया दे सकती हैं ताकि मैं अपने घरवालोंके पास पहुंच सकूं।"

"हां हां," कहते हुए महिलाने एक रुपया निकालकर पप्पूको दिया और पूछा, "तुम्हारे घरवाले कहां रहते हैं?"

पप्पू बोला, "इस समय तो मुझे छोड़कर सब सिनेमा गए हुए हैं। मैं वहीं जा रहा हूं!"

•

अध्यापिकाने आकर ज्यों ही दराज खोला, तो उसमें एक कुत्तेका पिल्ला मिला। उसने सबको डांटा। पर शरारतीका नाम बतानेका किसीको साहस नहीं हुआ।

अध्यापिकाको एक उपाय सूझा। वह बोली, "हम सब एक मिनिटके लिए आंखें बंद करके खड़े होंगे। जिस विद्यार्थीने यह शरारत की है वह आकर दराजके पास खड़ा हो जाए, तो उसे कोई दंड नहीं मिलेगा।

सब खड़े हो गए। किसीके चलनेकी आहट सुनाई दी और अध्यापिका मन ही मन प्रसन्न हुई कि आखिर उसकी सूझ काम कर गई, किन्तु जब सबने आंखें खोलीं, तो दराजके पास कोई नहीं था। अध्यापिकाने देखा कि दराजमें एकके स्थान पर दो पिल्ले शोर कर रहे थे!

—आशारानी

कहानी

सौ रुपये का चेक

स्वतंत्र

तुलसी उन दिनों हाई स्कूलमें पढ़ रहा था। देखनेमें वह अट्ठारह बरससे कमका नहीं लगता था, किंतु था वह केवल सोलह वर्षका। उसके पिताजी बहुत गरीब थे। कई सालसे वह एक दूकानमें चपरासीका काम कर रहे थे। बस, बहुत कठिनाईसे ही घरका और तुलसीकी पढ़ाईका खर्च पूरा हो पाता था।

उन दिनों शहरमें टाइफाइड (मियादी बुखार) बहुत जोरोंसे फैला हुआ था। घर घरमें उसके रोगी पड़े थे। उसके अपने घरमें भी उसकी मांने तीन सप्ताहसे चारपाई पकड़ी हुई थी। किंतु बुखार था कि उतरनेका नाम ही नहीं लेता था।

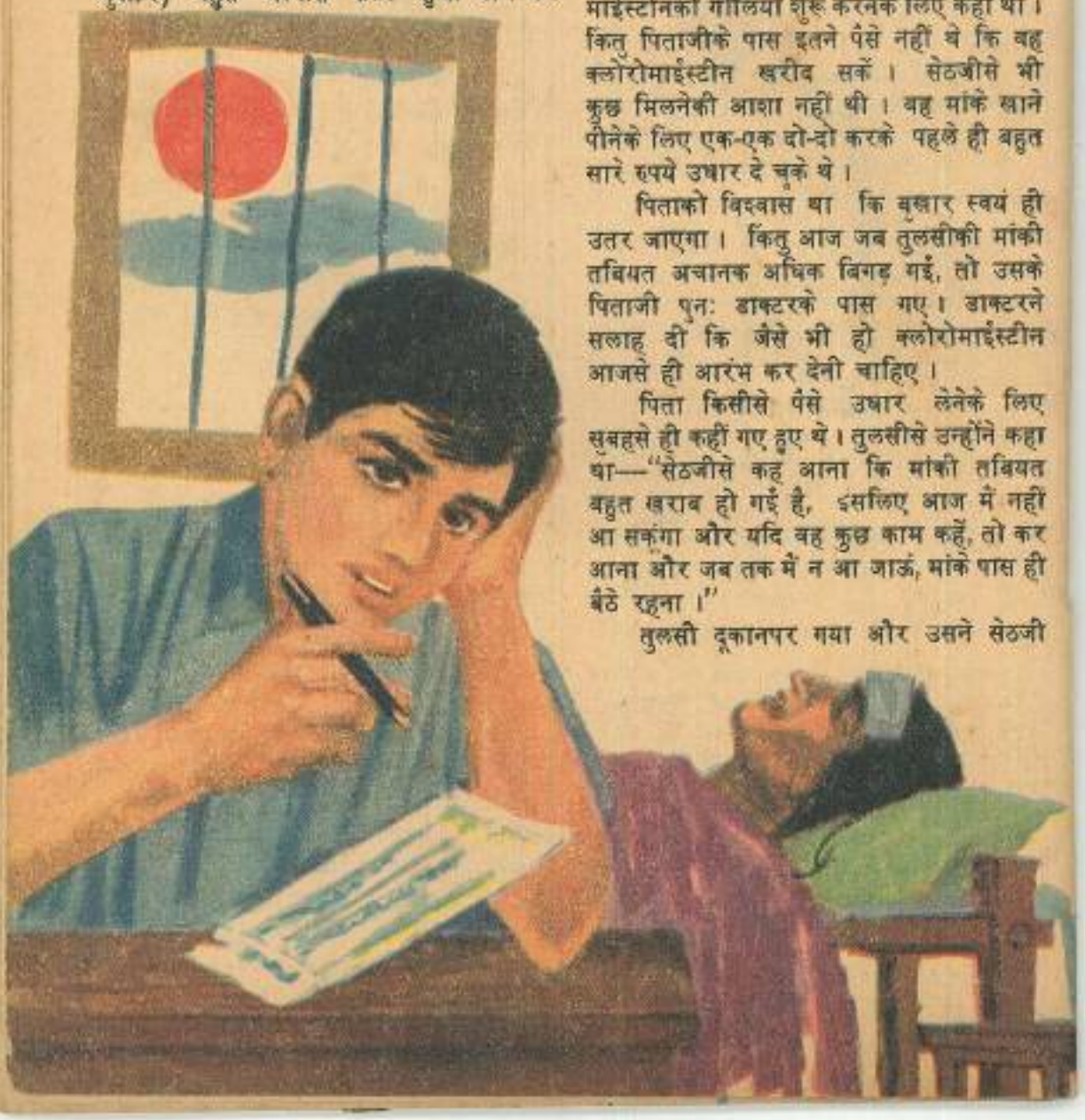

कुछ दिन पहले उसके पिता उसकी मांको डाक्टरके पास लेकर गए थे। डाक्टरने क्लोरोमाईस्टीनकी गोलियां शुरू करनेके लिए कहा था। किंतु पिताजीके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह क्लोरोमाईस्टीन खरीद सकें। सेठजीसे भी कुछ मिलनेकी आशा नहीं थी। वह मांके खाने पीनेके लिए एक-एक दो-दो करके पहले ही बहुत सारे रुपये उधार दे चुके थे।

पिताको विश्वास था कि बुखार स्वयं ही उतर जाएगा। किंतु आज जब तुलसीकी मांकी तबियत अचानक अधिक बिगड़ गई, तो उसके पिताजी पुनः डाक्टरके पास गए। डाक्टरने सलाह दी कि जैसे भी हो क्लोरोमाईस्टीन आजसे ही आरंभ कर देनी चाहिए।

पिता किसीसे पैसे उधार लेनेके लिए सुबहसे ही कहीं गए हुए थे। तुलसीसे उन्होंने कहा था—"सेठजीसे कह आना कि मांकी तबियत बहुत खराब हो गई है, इसलिए आज मैं नहीं आ सकूंगा और यदि वह कुछ काम कहें, तो कर आना और जब तक मैं न आ जाऊं, मांके पास ही बैठे रहना।"

तुलसी दूकानपर गया और उसने सेठजी

मोती और फूल

जब जब मैं रोती हूं,
कहती है मां—
"मोती झरते हैं झर-झर;
छोटी-सी बिटिया है,
छोटी-सी आंखें हैं,
लगते हैं कितने ये सुंदर!"
जब जब मैं हंसती हूं,
कहते हैं पिताजी—
"देखो, बरसे ये फूल—
भर-भर!
छोटी-सी बिटिया है,
छोटा-सा मुखड़ा है,
लगती है कितनी यह सुंदर!"
लेकिन मैं देखती हूं ध्यान से,
आंसू तो आंसू ही रहते हैं —
खारे नमकीन
मुंह में चले गए,
तो स्वाद बिगड़ जाता है।
मां इन्हें मोती क्यों कहती है?
और जब हंसती हूं,
तो होंठ खिल जाते हैं,
दांत दिखते हैं,
कुछ हा-हा सा होता है;
लेकिन कहीं फूल नहीं झरते हैं।
जाने पिताजीको—
फूल कहां दिखते हैं!
कैसे हैं बड़े लोग—
माता औ पिताजी;
बातें कैसी ये करते हैं?

—श्रीप्रसाद—

से सब कह दिया। सेठजीको तुलसीके पिताकी भांति उसपर भी पूर्ण विश्वास था। जब पिताको दूकान नहीं जाना होता था, तो तुलसी कई बार स्वयं चला जाता था और जरूरी काम कर आता था।

सेठजीने तीन-चार चैक उसको दिए और बोले—"बेटा, घर तो जा ही रहे होगे, रास्तेमें यह चैक भी देते जाना।"

तुलसीने चैकपर लिखे नामोंको पढ़ा। उसे समझते देर नहीं लगी कि चैक किस किसको देने हैं, क्योंकि वह कई बार कामसे इन लोगोंके पास जा चुका था। तभी उसकी दृष्टि सौ रुपये के एक चैकपर अटक गई। चैकपर बाईं ओर ऊपर-वाले कोनेमें न दो समानांतर रेखाएं खिंची हुई थीं और न कुछ लिखा हुआ था।

ऐसे चैकके पीछे प्राप्तकर्ताका नाम लिखकर कुछ ऊटपटांग हस्ताक्षर करके कोई भी उसे बैंक-की खिड़कीसे नकद भुनवा सकता है, यह उसे पता था।

तुलसीने चैकको ठीक करवानेके लिए सेठजी-की ओर देखा। किंतु वह अपने पोथी-पत्रेमें व्यस्त थे। तुलसीको ध्यान आया कि वह आज यहां क्यों आया है। उसकी मां सख्त बीमार है और पिताजी इस चिलचिलाती धूपमें दवाईके लिए पैसे इकट्ठे करने पता नहीं कहां मारे मारे फिर रहे हैं।

तुलसीने उस सौ रुपयेके चैकको अलग जेबमें डाला और अन्य चैकोंको अलगमें। बाकी चैक तो उसने दे दिए, किंतु वह नहीं दिया। वह उस दूकानके सामनेसे भी चुपचाप निकल गया जहां उसे देना था।

उसके घरसे आगे दो गलियां छोड़के सामने वाली लाईनमें स्टेट बैंक था। स्टेट बैंकके सामने केमिस्टकी दूकान थी।

Prashant Kumar, near

सभी अवसरों
के लिए
बिस्कुट

शालीमार
बिस्कुट

शालीमार बिस्कुट्स प्रा. लि.
सन मिल रोड, बम्बई - 13

Telstar-SB-30

State Bank, Bijnor.

तुलसीने सोचा—क्यों न एक बार मांको देख आऊं, फिर इस चैकको भी भुनवा लाऊंगा।

वह घर गया। मां अचेत-सी पड़ी थीं। तीन सप्ताहमें ही वह सूखकर लकड़ी हो गई थीं।

तुलसीको विश्वास नहीं था कि पिताजी किसीसे रुपये उधार ले ही आएंगे। यदि ले भी आएंगे, तो उधार तो चुकाना ही पड़ेगा। इसलिए उस चैकको भुनानेमें कोई हर्ज नहीं था।

उसने चैक जेबमेंसे निकाला। अच्छी तरह उलटा-पलटा। सेठजीका नित लाखों रुपयेका व्यापार होता था। तुलसीको विश्वास था कि सेठजीको इस सौ रुपयेके चैकके संबंधमें कुछ भी पता नहीं चलेगा। पता भी चलेगा, तो महीनों बाद। तब तक उन्हें यह स्मरण नहीं रहेगा कि चैक किसके हाथ भिजवाया था।

उसने विचारा—'यदि पिताजीने पूछा कि दवाईके पैसे कहांसे आए हैं, तो वह कह देगा कि एक मित्रने कुछ दिनके लिए रुपये उधार दे दिए हैं। थोड़ेसे रुपये उसने खाने-पीनेके लिए भी दिए हैं।

एक बज गया था। बैंक बंद होनेमें केवल एक घंटा शेष रह गया था। तुलसी कुछ बेचैन-सा हो रहा था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कभी उसे मांका वेदनामय स्वर सुनाई पड़ता, तो कभी पापके संभावित परिणाम उसकी आंखोंके सामने नाचने लगते थे।

तुलसीकी व्याकुलता बहुत बढ़ गई। पिताका अभी तक कुछ भी पता नहीं था। मां अचेत अवस्थामें पता नहीं क्या क्या बड़बड़ाए जा रही थीं। बैंक और कैमिस्टकी दूकानके ऊपर लगे बोर्ड बहुत ऊंचे होनेके कारण खिड़कीमेंसे स्पष्ट दिखाई पड़ते थे।

तुलसी तिलमिला उठा। उसे लगा जैसे दोनों बोर्ड उसे पुकार पुकारकर बुला रहे थे—'आ जाओ, हमारे पास आ जाओ।'

चैकपर पीछे हस्ताक्षर करनेके लिए उसने कलम निकाली। परंतु कलम रुक गई। उसे याद आया, एक दिन मां ने कहा था—"बेटा, बेईमानीका पैसा जहर होता है। पैसे नहीं हैं, तो धीरज रखो। विधाता सबकी सुनता है। किसीकी जल्दी, किसीकी देर से।"

'नहीं नहीं, मां, मैं तुम्हारे लिए जहर नहीं लाऊंगा,' वह बड़बड़ाने लगा और उसने चैककी बाईं ओर ऊपरवाले कोनेमें दो रेखाएं खींच दीं।

तुलसी जब चैक देकर लौटा, तो काफी रात हो गई थी।

तभी थके-मांदे पिताने घरमें प्रवेश किया। उन्होंने आठ रुपये तुलसीके हाथमें थमा दिए और बोले—"जाकर 'क्लोरोमाईसटीन' ले आओ। हां, स्टेट बैंकके सामनेवाली दूकानमें न जाना। अभी अभी पुलिसने उसकी दुकानमें सील लगा दी है। आज उस बेईमानने नकली 'क्लोरोमाईसटीन' बेचकर बेचारे कई रोगियोंकी हत्या कर डाली है।"

तुलसी जब दवाई लेकर लौटा, तो उसके मुखपर मुस्कान खिली हुई थी। उसे लग रहा था कि वह मांके लिए अमृत ले आया है। ●

मम्मी-विरोधी क्लब

(पृष्ठ ९ से आगे)

रखने वाला हरीश ही बोला, "क्लब सब कुछ करेगा। बाकी बातें हम मीटिंग करके तय करेंगे। पहले हरेक कार्यमें कठिनाई आती है।"

"पर मम्मी हमें जन्म. . ." टिंकूकी आवाज गलेमें ही फंसी रह गई, तभी अचानक जाने कहांसे पूसी बिल्ली टोलीके बीचोंबीच कूदी, फिर छलांग मारकर वह नीमके तनेपर जा बैठी।

पास ही दूसरे मकानकी छतसे एकदम शेरू कुत्ता आया। 'म्याऊं!'—बिल्लीने नीमपरसे कुत्तेको चिढ़ाया।

शेरू पूसीकी ओर मुंह करके उसे क्रोधसे देखने लगा।

नीनाको जाने क्या सूझी, उसने एक कंकर उठाकर शेरूपर दे मारा। वह क्रोधमें भरा तो था ही, गुर्राता हुआ बच्चोंकी टोलीकी ओर झपटा। टोलीमें भगदड़ मच गई।

'मम्मी. . . हाय मम्मी . . . मम्मी. . .' के शोरसे पूरा महल्ला गूंज उठा।

कई बच्चे सीढ़ियोंकी ओर लपके, पर शेरू छलांग मारकर सबसे ऊपरवाली सीढ़ीपर खड़ा हो गया था। बच्चे छतपर इधर-उधर भागने लगे। तभी इस चीख-पुकारको सुनकर तथा अपने अपने बच्चोंकी आवाज और रोनेका ढंग पहचानकर सबकी मम्मियां वहां पहुंच गईं। शेरूको भगा दिया गया और सब बच्चे सुबकते हुए अपनी अपनी मम्मियोंके आंचलोंमें छिप गए। ●

दुनिया की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी लोककथाएं

• रामनारायण उपाध्याय

आओ, बच्चो, मैं तुम्हें दुनियाकी कुछ छोटी-से छोटी और बड़ी-से बड़ी कथाएं सुनाता हूं। कुछ कथाएं छोटी क्यों होती हैं, इस संबंधमें सबसे पहले एक अवधी लोककथा सुनो :

(१)

एक था ढेला और एक था पत्ता। दोनोंने यह सलाह की कि जब भी हमपर मुसीबत आएगी, हम एक दूसरेकी मदद करेंगे।

ढेलेने कहा, "जब आंधी आएगी, तो मैं तुम्हें बचाऊंगा।"

पत्तेने कहा, "जब पानी आएगा, तो मैं तुम्हें बचाऊंगा।"

संयोगकी बात कि एक दिन आंधी-पानी दोनों एक साथ आए। अतः आंधीसे पत्ता था सो उड़ गया और पानीमें ढेला था सो घुल गया।

अगर दोनों एक साथ नहीं आते, तो हमारी कथा भी आगे बढ़ती।

(२)

अब चेकोस्लोवेकियाकी एक लोककथा सुनो, कहानी छोटी क्यों होती है उसके बारेमें :

एक आदमी था। उसे जंगलमें एक सुंदर डिब्बी मिली। आगे बढ़नेपर उसे एक चाबी भी मिली। उसने चाबीसे डिब्बीको खोला, तो उसके अंदर एक कोट था। उसने उसे पहनना चाहा, लेकिन कोट छोटा था।

अगर कोट लंबा होता, तो हमारी कथा भी लंबी होती।

(३)

वहींकी एक और कहानी सुनो। देखो, उसने कहानीको छोटा बनानेका कैसा सुंदर उपाय खोज निकाला है।

एक गड़रिया था। उसके पास एक काला कुत्ता था. . .लेकिन तुम्हें डरना नहीं चाहिए। अगर तुम डरोगे, तो मैं कहानी आगे नहीं कहूंगा।

हां, तो एक गड़रिया था। उसके पास एक काला कुत्ता था. . .लेकिन तुम तो डर रहे हो, इसलिए मैं आगे कहानी नहीं कह सकता।

(४)

अब अपने देशकी एक आदिवासी लोककथा सुनो :

एक थे भगवानजी। उन्होंने एक मटका बनाया। मटका जब बन गया, तो उन्होंने उसे ठोंक-बजाकर देखना चाहा। इतनेमें वह उनके हाथसे गिरकर टूट गया। वह बहुत घबराए और उन टुकड़ोंको जोड़नेका प्रयत्न करने लगे।

लेकिन अगर टूटे हुए मटकेको जोड़ा जा सकता, तो आदमी भी अमर होता और उसकी कहानी कभी समाप्त नहीं होती।

(५)

अब मैं दुनियाकी सबसे बड़ी कहानी तुम्हें सुनाता हूं :

एक था राजा। उसको कहानी सुननेका बहुत शौक था। उसने अपने राज्य भरमें मुनादी करा दी कि जो कोई उसे इतनी बड़ी कहानी सुनाएगा, जिसको सुनते सुनते वह हार जाए, तो उसको वह अपना आधा राज्य दे देगा। लेकिन यदि कहानी सुनाने वाला हार गया, तो राजा उसका सिर काट लेगा।

राजाकी यह घोषणा सुनकर कितने ही लोग उसे कहानी सुनाने आए। किसीने एक दिन

तक कहानी सुनाई, किसीने दो दिन तक। लेकिन कोई भी राजाकी शर्त जीत नहीं सका और सबको अपने प्राण गंवाने पड़े। एक दिन एक आदमी आया और बोला कि मैं राजाको कहानी सुनाऊंगा। मंत्रियोंने उसे बहुत समझाया, लेकिन उसने एक नहीं मानी। लाचार उसे राजाके पास भेज दिया गया।

नए कहानीकारको देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने अपने राज्य सिंहासनपर बैठते हुए कहा, "अच्छा, अब अपनी कहानी शुरू करो।"

कहानीकारने कहा, "मैं अपनी कहानी तो शुरू करता हूं, लेकिन आपको 'हुंकारा' देते जाना होगा।"

राजाने कहा, "इसमें कौन-सी बात है। मैं बराबर 'हुंकारा' देता जाऊंगा।" तब उस कहानीकारने अपनी कहानी शुरू की :

"एक था राजा। वह अपनी प्रजाको बहुत चाहता था। एक दिन उसने सोचा कि अगर अपने राज्यमें अकाल पड़ा, तो क्या होगा? सोचते सोचते उसे एक उपाय भी सूझ गया। उसने अपने मंत्रियोंको बुलाया और हुक्म दिया कि एक बखारी बनाओ, जो एक योजन लंबी, एक योजन चौड़ी तथा एक योजना ऊंची हो और उसे चावलोंसे भर दो। राजाका हुक्म था, सो तुरंत ही बखारी बन गई और उसे चावलोंसे भर दिया गया।"

इतनी बात सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

कहानीकारने कहा, "अब राजाको कोई फिक्र नहीं रह गई। लेकिन तकदीरकी बात कि उस बखारीमें एक छेद रह गया। वह छेद इतना छोटा था कि उसमेंसे एक चिड़िया अंदर जाकर बाहर आ सकती थी। देखते देखते यह खबर दुनिया भरमें फैल गई और दुनिया भरकी चिड़ियाएं वहां आकर इकट्ठी हो गईं।"

राजाने अत्यंत ही उत्सुकतासे पूछा, "फिर क्या हुआ?"

कहानीकारने कहा, "फिर एक चिड़िया

आई और उस छेदमेंसे अंदर जाकर चावलका एक दाना चोंचमें दबाकर फौरन फुर्र हो गई।"

राजाने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

कहानीकारने आगे कहा, "फिर एक चिड़िया और उस छेदमेंसे अंदर जाकर चावलका एक दाना लेकर फुर्र हो गई।

राजाने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

कहानीकारने कहा, "फिर एक और चिड़िया अंदर जाकर एक दाना चोंचमें लेकर फुर्र हो गई।"

राजाने खीजकर कहा, "फुर्र फुर्र क्या करते हो। आगे कहानी कहो, ताकि कुछ न कुछ बात तो बने।"

कहानीकारने कहा, "अब आगे कहानी कैसे कहूं। अभी तो राजाकी बखारी भरी है और दुनिया भरकी चिड़ियाएं बाहर खड़ी हैं। जब तक बखारी खाली नहीं हो जाती, तब तक कहानी आगे कैसे बढ़ेगी?"

राजा समझ गया कि यह कहानी उसके जीवनमें तो समाप्त होने वाली नहीं है। लाचार उसने उस कहानीकारसे हार मान ली और उसे अपना आधा राज्य दे दिया। ●

आज के बच्चे कल के सैनिक

बनेंगे

S AND K

Trade Mark Regd.

प्रस्तुत करते हैं...

एक नया सुंदर उपहार अपने नन्हे-मुन्ने सैनिकों के लिए

"कोमा"

हवाई बंदूक

PATENT PENDING

एक साथ छः गोलियाँ छोड़ती है – पूर्णतः सुरक्षित चाहे बाहर खेलें, चाहे कमरे में!

अधिकृत थोक विक्रेता:

मैसर्ज़. गेम्स एण्ड टॉयज़-इंडिया
14-15, पहली मंज़िल, अमृत मार्केट,
सदर बाज़ार, देहली-6.

फोन:- 227467

SUGGESTED RETAIL PRICE: Rs. 5·75
V.P.P. CHARGES Extra: Rs. 2·75
PER PIECE

निर्माता:-

एजेन्ट्स चाहियें

फ़ोन:- 212288

सिंघानिया एण्ड कापड़िया मैन्यू. कं.

1/406, जी· टी· रोड, देहली-32.

Rama Pubs.

ये चमगादड़ (पृष्ठ ११ से आगे)

कारण बच्चा नीचे नहीं गिरने पाता। जन्म लेनेके लगभग दो हफ्ते बाद बच्चेकी आंखें खुल जाती हैं। इतने दिनों तक मादा उसे अपनी छातीसे लगाए रखती है और अपने स्तनोंसे दूध पिलाती है। इसके बाद उसे पैरोंके सहारे उल्टा लटकाकर खानेकी तलाशमें इधर-उधर निकल पड़ती है, लेकिन बीच बीचमें आकर उसकी देखभाल करती रहती है।

जीव-विज्ञान-वेत्ताओंके अनुसार धरतीपर जितने रीढ़वाले जानवर हैं, उनमें सबसे अधिक संख्या चमगादड़ोंकी है। संसारमें शायद ही कोई ऐसा देश हो जहांपर चमगादड़ न पाए जाते हों। आकार-प्रकार, रूप-रंग और नाक-कानकी रचनाकी दृष्टिसे चमगादड़ोंकी अनेक जातियां और किस्में होती हैं। वैसे मोटे तौरपर इनको दो मुख्य वर्गोंमें बांटा जा सकता है—छोटे और बड़े।

छोटे चमगादड़ प्रायः मांसाहारी और बड़े फलाहारी होते हैं। पहली तरहके चमगादड़ कीड़े-मकोड़ोंके अलावा गिलहरी, छोटे छोटे चमगादड़ और अन्य प्रकारके जीव-जंतुओंका शिकार करते हैं। दूसरे वर्गके चमगादड़ फल खाते हैं। चमगादड़ोंकी कुछ जातियां ऐसी पाई जाती हैं, जो सिर्फ फूलोंका मधु और पराग खाकर ही रहती हैं। उनकी थूथनी काफी फैली हुई और जीभ बहुत लंबी होती है।

सबसे बड़ा चमगादड़ जावा (इंडोनेशिया) में पाया जाता है। इसे उड़न-सियार कहा जाता है। इसके दोनों पंख खुलनेपर लगभग पांच फुट जगह घेरते हैं। लंबकर्ण चमगादड़के कान उसके शरीरकी तुलनामें बड़े होते हैं। चमगादड़ोंमें 'वैम्पायर' जातिका चमगादड़ सबसे भयानक होता है। इसको शैतान चमगादड़ भी कहा जाता है। यह मैक्सिको और मध्य अमरीकामें पाया जाता है और जीवित प्राणियोंका रक्त पीकर अपना पेट भरता है। मौका मिलनेपर यह सोते हुए आदमीपर भी हमला कर देता है और उसका तलवा छेदकर खून पी जाता है। इसकी नाक बरछेकी तरह नुकीली और दांत बहुत तेज होते हैं। इनके अलावा बुलडाग, दुमदार, छोटी नाक और लंबी जीभवाले तथा अन्य कई तरहके चमगादड़ पाए जाते हैं।

भारतमें भी चमगादड़ोंकी कई जातियां पाई जाती हैं। बड़े चमगादड़ोंमें हमारे यहां गादुर पाया जाता है, जो फल खाता है। इससे छोटोंमें लंबकर्ण और दुमदार चमगादड़ प्रसिद्ध हैं, जो देशके प्रायः सभी हिस्सोंमें पाए जाते हैं। इनके अलावा हमारे यहां एक और भी छोटे कदका चमगादड़ मिलता है जिसे चमगिदड़ी कहते हैं।

ये छोटे कदके चमगादड़ अधिकतर अंधेरी गुफाओं, वीरान इमारतों और घने जंगलोंमें पेड़के तनोंसे चिपटे रहते हैं। पेड़पर लटकने वाले चमगादड़ अपने रंगोंसे मेल खाती पत्तियोंमें छिपते हैं, ताकि दुश्मनोंसे अपनी रक्षा कर सकें। इसके दुश्मनोंमें उल्लू, बाज, नेवला और लोमड़ी मुख्य हैं। इनमें इसका सबसे बड़ा दुश्मन उल्लू होता है। चमगादड़की तरह उल्लू भी रातको निकलता है और अधिकतर उन जगहोंमें निवास करता है, जहांपर चमगादड़ छिपते हैं। इसी लिए इसे उनका शिकार करनेमें आसानी रहती है।

चमगादड़ मनुष्यका शत्रु नहीं, मित्र है। यह खेतीको नुक्सान पहुंचाने वाले कीड़ों और गिलहरियोंका सफाया करता है। यही नहीं, यह जहांपर रहता है, वहांपर लोगोंको कभी मलेरिया नहीं होता है। विज्ञान भी इसका कम ऋणी नहीं है। रडार जैसे यंत्रोंका आविष्कार इसीके कारण संभव हुआ है। सच पूछो तो चमगादड़ जीव-जगतका एक रहस्यमय और चमत्कारी प्राणी है। शायद इसीलिए इसकी गिनती न तो पशुओंमें होती है और न पक्षियोंमें। ●

पृष्ठ १९ पर प्रकाशित चित्र पहेलियों के उत्तर

१—तालेका ऊपरी भाग।
२—दूध बाल
३—लोहेकी कीलका ऊपरी हिस्सा
४—स्टोवका जलता हुआ बर्नर
५—उल्टा रखा हुआ लहसुन
६—चाक
७—माचिसकी तीली

हमने लिखना कैसे सीखा?

—अजहर शम्सी

ज़रा ऐसी दुनियाकी कल्पना करो, जिसमें पढ़नेके लिए न कहानीकी किताबें मिलें और न सुंदर दिलचस्प पत्रिकाएं, जहां स्कूलोंमें पढ़ाई-लिखाई न हो, समाचारपत्र न निकलें, पत्र-व्यवहारका नामोनिशान तक न हो, ऐसी दुनियामें आदमीका हाल क्या होगा? वैसा ही न, जैसा हजारों बल्कि लाखों साल पहले था; जब वह गुफाओंमें रहता था, शिकार करके खाता था और जानवरोंकी खालसे शरीर ढांपता था।

सवाल यह है कि पढ़ाई-लिखाईका सिलसिला शुरू कैसे हुआ। किसे यह खयाल आया कि 'अ'की शक्ल इस तरहकी होनी चाहिए और 'उ' की इस तरहकी? किसने यह सोचा कि रोमनके 'ए' को यों बनाना चाहिए और 'बी' को यों? तुम्हें शायद इस बातका अनुमान न हो कि इस काममें इनसानको हजारों साल लग गए थे।

इनसानको पहले पहल जब अपनी बात लिखकर दूसरे तक पहुंचानेका खयाल आया, तो उसने सोचा कि बात इस तरहसे कहनी चाहिए, जो दूसरे आसानीसे समझ लें। इसलिए शुरूमें चित्रोंसे बात प्रकट करनेका काम लिया गया। उदाहरणके लिए अगर पानीकी जरूरत होती, तो नदीका चित्र बना दिया जाता, अगर भूखकी इच्छा प्रकट करनी होती, तो शिकारका जानवर दिखा दिया जाता।

इन चिन्होंका प्रयोग होना और उनका पत्थरों आदिपर लिखा जाना हमारे वर्तमान अक्षरोंका सबसे पहला रूप था।

एक कहानीके अनुसार ईरानके सम्राट दाराको यूनानियोंने जो अंतिम चेतावनीका संदेश भेजा था वह कोई पत्र न था, बल्कि पांच तीर, एक कबूतर, एक मेंढक और एक चूहा—एक साथ भेजे गए थे, हालांकि उस समय लेखन-कला आरंभ हो चुकी थी। उसका मतलब यह था कि कि ईरानियो, तुम अगर कबूतरकी तरह उड़ सकते हो, तो उड़ जाओ; मेंढककी तरह फुदक सकते हो, तो कहीं छिप जाओ और चूहेकी तरह अगर भाग सकते हो, तो भाग जाओ, वरना तुम्हें हमारे तीरोंका शिकार होना पड़ेगा।

धीरे धीरे यह अनुभव होने लगा कि चित्रों द्वारा लिखना बहुत मुश्किल है। मोहेंजो-दड़ोमें कुछ बरस पहले खुदाईमें जो सामान निकला, उसमें पत्थरकी कुछ तख्तियां भी थीं। कहा जाता है कि यह लिखाईका प्रारंभिक रूप है। फिर यह चलन भी शुरू हो गया कि तरह तरहके शब्द बनानेके लिए एक चित्रको दूसरेसे जोड़ा

मोहेंजो-दड़ोकी खुदाईमें प्राप्त पत्थरकी तख्तीपर अंकित लिखाईका प्रारंभिक रूप

जाए, मगर यह काम भी बहुत मुश्किल था। उदाहरणके लिए अगर यह लिखना हो कि मुझे बहुत भूख लगी है, तो पहले अपनी तस्वीर बनानी पड़ती, फिर भूखको प्रकट करनेके लिए चित्र दिखाना होता। यह दिखानेके लिए कि भूख बहुत लगी है उसमें कोई विशेषता पैदा करनी पड़ती। एक साधारण-सा वाक्य अच्छा खासा गोरखधंधा बन जाता।

अब भी कांगो, नाइजीरिया और आस्ट्रेलियाके कुछ पुराने कबीलोंमें ऐसे ही चित्रोंसे काम लिया जाता है।

कहते हैं कि आजसे लगभग सात हजार साल पहले ईराकमें एक ऐसी लेखन-विधि बनानेकी कोशिश की गई, जिसमें हर शब्दके

लिए एक विशेष रूप नियत कर दिया गया। जैसे –'हां' एक तरह लिखा गया और 'त' दूसरी तरह। इस तरह कोई ढाई-तीन हजार शब्दोंके रूप तय हो गए। स्पष्ट है कि यह काम आसान न रहा होगा। सैकड़ों साल लगे होंगे तब कहीं जाकर यह तय हुआ होगा कि एक विशेष शब्द किस रूपमें लिखा जाए, जिसे सब पहचान लें। इस लिखाईकी आधार-शिला पुराने किस्मके संकेत थे। लेकिन इसमें ऐसी भावनाओंका बयान भी हो सकता था जिनका चित्र नहीं बनाया जा सकता। किंतु यह लिखाई बहुत जगह घेरती थी।

इसका हल भी इनसानने ढूंढ़ ही लिया। कहते हैं कि इससे पहले शाम और फिलस्तीन (वर्तमान जार्डन और इस्राइल) के क्षेत्रमें ऐसी लिखाई बनानेकी कोशिश की गई, जिसमें अक्षरोंको वाक्योंके लिए नहीं बल्कि ध्वनियोंके लिए भी तय किया गया। आजकी दुनियामें लिखनेके ढंगोंका आधार यही सिद्धांत है। इसमें संदेह नहीं कि यही लिखाई शायद दुनियामें सबसे पहली लिखाई थी जिसमें चित्रोंसे काम लेना समाप्त हुआ और कुछ अक्षरोंके रूप तय कर दिए गए, जिनसे इनसान अपने भाव प्रकट करने लगा। यह लिखाई पांच हजार साल पुरानी बताई जाती है। इसे बाएंसे दाएं लिखा जाता था जिस तरह उर्दू लिखी जाती है।

इसी प्रकार गंगा और सिंधुकी घाटीमें अर्थात वर्तमान पश्चिमी पाकिस्तान और उत्तरी भारतमें ब्राह्मी लिखाईका आरंभ हुआ। इसी लिखाईको उर्दू, सिंधी और कश्मीरीको छोड़कर भारतकी प्रायः सभी भाषाओंने अपनाया। इसके साथ इसे लंका, थाईलैण्ड, बर्मा, मलाया और हिन्देशियाकी भाषाओंकी जननी भी समझा जाता है। दिलचस्प बात है कि इस ब्राह्मी लेखन-विधिमें और पांच हजार वर्ष पुरानी फिलस्तीनी लिखाईमें कई अक्षर और उनकी ध्वनियां एक-सी हैं। इसीसे शायद यह भेद खुलता है कि अबतक अधिकांश भाषाओंमें पहला अक्षर 'अ', 'अलिफ' या 'ए' क्यों है। उदाहरणके लिए मांको अंग्रेजीमें मदर, संस्कृतमें मातृ, फारसीमें मादर और यूनानीमें मतीर-यार कहते हैं।

अब तक आर्मीनी और ब्राह्मी भाषाओंकी चर्चा हुई है। आर्मीनी भाषासे लगभग चार हजार बरस पहले यूनानी भाषाका आरंभ हुआ। यह बहुत दिलचस्प भाषा थी। इसमें आर्मीनीके मुकाबलेमें दुगने शब्द थे। मगर यूनानियोंने उसे दाएंसे बाएं शुरू करते हुए भी सीधा लिखनेकी बजाय ऊपरसे नीचे लिखना आरंभ कर दिया। यह ढंग और कई भाषाओंने अपना लिया, लेकिन अब केवल चीनी भाषा ही ऊपरसे नीचेको लिखी जाती है।

इसी प्राचीन यूनानीसे रोमन लेखन-विधि तैयार हुई जिसे अंग्रेजी और अन्य योरूपीय भाषाओंकी जननी कहते हैं। यह लेखन-विधि ढाई हजार सालसे अधिक पुरानी नहीं है, जबकि

हजारों साल पहले मिस्रमें लिखाईकी शुरुआत सांकेतिक चित्रों द्वारा हुई थी

हमारी भाषाओंकी लिखाईके ढंग पांच-छह हजार वर्ष पुराने हैं।

कोई लेखन-विधि, नई हो या पुरानी, एक ऐसी देन है जिसके बिना हम आजकी दुनियाकी कल्पना भी नहीं कर सकते। आजकी इस देनके लिए हमें उन हजारों गुमनाम बुद्धिमानोंका धन्यवाद भी करना चाहिए जो हजारों साल मेहनत करके लिखनेका एक ऐसा ढंग तैयार करनेमें सफल हुए जिसके कारण हम लिखकर एक दूसरे तक अपने विचार पहुंचा सकते हैं जैसे आपसमें बातें कर रहे हों। ●

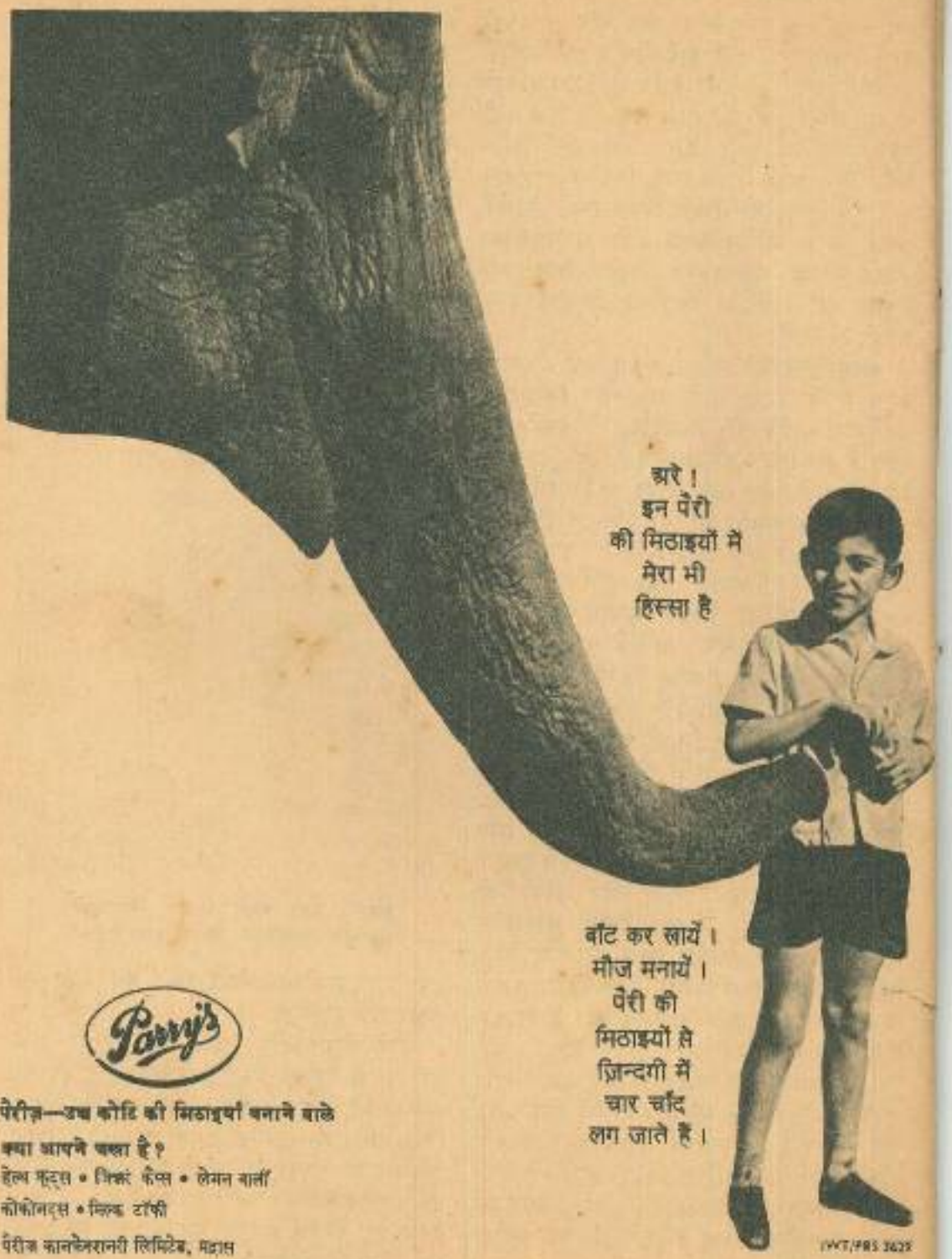

Parry's

पैरीज़—उच्च कोटि की मिठाइयाँ बनाने वाले

क्या आपने चखा है ?

हेल्थ फ्रूट्स • मिक्स्चर कैंडीज • लेमन बार्ली

कोकोनट्स • मिल्क टॉफी

पैरीज़ कानफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

PWT/PRS 3625

(इस स्तंभमें बच्चोंके लिए नव प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● हमारी नदियां (पृष्ठ संख्या १३२); मूल्य : दो रुपये ● आदर्श देवियां (पृष्ठ संख्या ११२); मूल्य : डेढ़ रुपया ● नीतिके बोल (पृष्ठ संख्या ९४); मूल्य : डेढ़ रुपया ● पावन प्रसंग (पृष्ठ संख्या ९६); मूल्य : डेढ़ रुपया; चारों पुस्तकोंके संपादक : यशपाल जैन; प्रकाशक : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

राष्ट्र-निर्माण-मालाके अंतर्गत प्रकाशित सस्ता साहित्य मंडलकी ये और चार कड़ियां हैं। प्रकाशकके अनुसार इस ग्रंथ-मालाके प्रकाशनका उद्देश्य है बाल पाठकों और प्रौढ़ोंके लिए ऐसी सामग्री मुहैया करना, जिसे पढ़कर उन्हें देशकी भौगोलिक विशिष्टता तथा राष्ट्रके गौरवशाली अतीत एवं वर्तमानके बारेमें जानकारी हो और देशके नव-निर्माणकी प्रेरणा मिले।

पहली पुस्तक 'हमारी नदियां' में गंगा, कावेरी, गोदावरी और चम्बलकी कहानियां दी गई हैं। गंगाजी-की गाथा लिखी है श्री रामचंद्र तिवारीने, कावेरीकी कहानी सुनाई है श्री पूर्ण सोमसुन्दरमने और गोदावरी तथा चम्बलकी कथा कही है क्रमशः श्री देवराज 'दिनेश' और श्री शंकर वामने। चारों नदियोंकी पौराणिक कथाएं इनमें दी गई हैं तथा इन नदियोंसे होने वाले लाभ और इनकी भौगोलिक विशेषताओंको भी बताया गया है—जैसे ये नदियां हमें जल देती हैं, उनसे खेती-बाड़ी होती है, अन्न मिलता है, आवागमनके साधनोंके रूपमें इनका इस्तेमाल किया जाता है। ये न हों तो हमारा जीना मुश्किल हो जाए, इसी लिए हमारे देशमें नदियोंको आदिकालसे माता नामसे पुकारा जाता रहा है।

दूसरी पुस्तक 'आदर्श देवियां' में सती अनसूया, महारानी अहिल्या बाई और कस्तूरबा गांधीकी जीव-नियां दी गई हैं। इनको क्रमशः श्री देवराज 'दिनेश', श्री ब्रजनाथ महोदय तथा विष्णु प्रभाकरने लिखा है। तीनों कहानियां पाठकोंमें सेवा, त्याग और बलिदानकी भाव-नाएं जगाएंगी और उन्हें अन्यायसे जूझनेकी प्रेरणा और बल प्रदान करेंगी। यह पुस्तक केवल नारी-समाजके लिए नहीं, अपितु बाल पाठक-पाठिकाओंके लिए भी उपयोगी है।

तीसरी पुस्तकमें संत कवि कबीरकी साखियां, दादू-दयालकी वाणी और गिरिधर कविरायकी कुंडलियां संकलित की गई हैं। साथमें उनकी संक्षिप्त जीवनियां भी दी गई हैं।

संकलन तीनों कवियोंकी उन्हीं रचनाओंका किया गया है, जो जनतामें 'नीति वचनों' के रूपमें प्रचलित हैं और सरल तथा सुबोध हैं। यदि कहीं कुछ कठिन तथा अप्र-चलित शब्द आ भी गए हैं, तो उनके अर्थ फुट-नोटोंके रूपमें दे दिए गए हैं। गिरिधर कविरायकी कुंडलियोंका तो सरल अर्थ भी दे दिया गया है। इससे पुस्तककी उप-योगिता बढ़ गई है।

चौथी पुस्तक 'पावन प्रसंग' में आचार्य विनोबा भावे-के जीवनके कुछ मार्मिक और प्रेरणादायक प्रसंगोंका संकलन किया गया है तथा उनके सर्वोदय आंदोलनके संबंधमें भी जानकारी दी गई है। बाल पाठकोंके अलावा गांवोंके पुनरुत्थान तथा गांधीवादी विचारधारामें रुचि रखने वालोंके लिए भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

चारों पुस्तकोंमें स्थान स्थानपर अनुकूल चित्र भी दिए गए हैं। पुस्तकोंकी भाषा सरल और सुबोध है। साज-सज्जा और छपाई-सफाई अच्छी है। मूल्य भी उचित है।

● फसल जलियांवाले बाग की (पृष्ठ संख्या ५२); मूल्य : दो रुपये; लेखक : राष्ट्र बंधु; प्रकाशक : नर्सरी पब्लिशिंग होम, अशोक नगर, कानपुर।

इस पुस्तकमें कुछ साहसी वीरोंकी संक्षिप्त जीवन-झांकियां दी गई हैं तथा हालके पाकिस्तानी आक्रमणके समयके कुछ मार्मिक प्रसंगोंका भी समावेश किया गया है—जैसे बारामूलाका पहला बलिदानी; अकेले स्टेनगन लेकर मुकाबला, एक चरवाहेका नागरिक सम्मान, युद्धके मोरचेसे एक पत्र आदि आदि।

बाल पाठकोंमें वीर जवानोंके इन वीरतापूर्ण मार्मिक प्रसंगोंको पढ़कर देश-प्रेमकी भावनाएं पैदा होंगी और अपने बहादुर वीरोंके इन बलिदानोंसे वे साहस, सेवा, त्याग और बलिदानका पाठ पढ़ेंगे।

पुस्तककी भाषा सरल और सुबोध है। छपाई-सफाई भी संतोषजनक है।

● रसभरे आम (पृष्ठ संख्या : ३६); मूल्य : पिचहत्तर पैसे; लेखक : वेद कुलश्रेष्ठ; प्रकाशक : रामप्रसाद एंड संस, आगरा।

'रसभरे आम' कवि वेद कुलश्रेष्ठकी ३५ कविताओं-का संकलन है। छोटे बच्चोंके लिए ये कविताएं उपयोगी सिद्ध होंगी। वे इन्हें चावसे पढ़ेंगे और पढ़नेके साथ साथ बहुत कुछ जानेंगे भी। बाल-जीवनसे संबंधित विविध विषयों—घोड़ा, मोर, गाय, बापू, वर्षा, बसंत, होली, रेल आदि— भावनाओं और विचारोंको कविने अपनी कवि-ताओंका विषय बनाया है। भाषा आसान और मुहावरे-दार है। छपाई-सफाई अच्छी है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

—अरुणकुमार

मगर के दांत

आज हम तुम्हें दो खेल अपने खिलौनोंके डिब्बेमें जोड़नेके लिए दे रहे हैं। ये दोनों ही तुम्हारे नन्हे-मुन्ने भाई-बहनोंके लिए हैं . . . और अगर तुम स्वयं ही नन्हे-मुन्ने हो, तो फिर क्या ही कहने!

पहला खेल है मगरके दांत लगाना। सामनेके पृष्ठपर जो मगरके चित्रको देखते हो, उसमें तुम्हें बेचारेका ऊपरका जबड़ा नहीं मिलेगा। इसी लिए तो वह दांतोंके डाक्टरके पास आया है और उसीकी कुरसीपर बैठा है। बस, समझ लो कि तुम्हीं दांतोंके डाक्टर हो। तुम्हें करना क्या है यह हम बताते हैं।

मगरके ऊपरके जबड़ेपर एक दानेदार रेखा बनी हुई है। ब्लेड या पैने चाकूकी सहायतासे इस रेखाको आरपार काट लो, अब अपनी अम्माजीसे कहो कि तुम्हें इतना बड़ा कंघेका टूटा हुआ एक टुकड़ा दें, जो मगरके जबड़ेपर फिट बैठ जाए। कंघेके टुकड़ेके दांते कागजके पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर निकालो। जब तुम कागजके पीछेसे कंघा ऊपर-नीचे करोगे, तो लगेगा कि मगर अपने दांत चलाकर देख रहा है। देखो नीचे दिया हुआ नमूना–१।

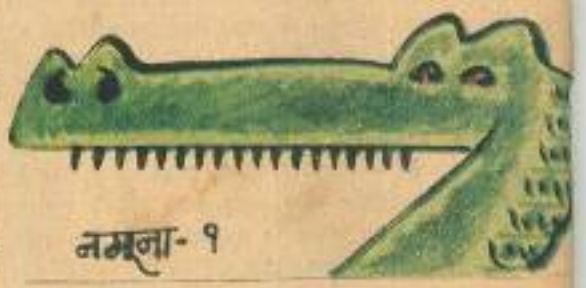

जो बच्चे अपने खिलौनेके डिब्बेको अनेकों बार नई नई चीजोंसे भर चुके हैं, वे जानते होंगे कि सामनेके पृष्ठकी यह तसवीर काटकर, पोस्टकार्ड जैसे गत्तेपर चिपकाकर, किताबोंके नीचे दबाकर उसे सीधा सूखने देते हैं और उसके बाद दानेदार रेखा काटकर खेलको अपने डिब्बेके संग्रहमें जोड़ लेते हैं।

दूध की परी

तुम्हारे एक-दो छोटे भाई-बहन ऐसे भी हो सकते हैं, जो दूध पीनेसे जी चुराते हैं। उन्हें अगर तुम यह बताओ कि उन्हें एक छोटी-सी खूबसूरत परी दूध पिलाएगी, तो वे फौरन दूध पीनेके लिए तैयार हो जाएंगे।

सामनेके पृष्ठपर चौखटेमें दी हुई परीकी तसवीर बाहरी चौकोर रेखाओंपर काट लो। अब इसे कांचके एक अच्छेसे गिलासके ऊपर उल्टी रखकर (परीका चित्र गिलासकी अंदरकी ओर रहे) चारों कोनोंपर चिपकाने वाली टेप या कागजकी लेई लगी पट्टीसे इस प्रकार चिपका दो — जैसा नमूना नंबर–२ (इसी पृष्ठपर) दिया हुआ है। जब तुम दूसरी ओरसे देखोगे, तो परी गिलासके भीतर झांकती दिखाई देगी।

इस गिलासमें नन्हेके लिए दूध भर लो — 'पूरा भरा है' तक। इसके बाद नन्हेको दिखाओ कि 'पूरा भरा है'। जैसे जैसे वह दूध पिएगा, गिलासके दूसरे संकेत प्रकट होते जाएंगे। गिलास खाली होनेपर परी प्रसन्न हो जाएगी। •

नमूना-२

खिलौना-१

खिलौना-२

प्रशान्त कुमार निकर

आपके राजा बेटे की प्रतिभा

भले ही किसी अन्य क्षेत्र में चमके, लेकिन आप तो उसे बढ़ावा देना ही चाहेंगे।

इसी तरह उसे बचपन ही से पैसे की नियमित रूप से बचत करने के लिए बढ़ावा दीजिए। पैसे की बचत के लिए बैंक ऑफ इन्डिया में विशेष सुविधाएँ हैं:

सेविंग्ज़ बैंक एकाउण्ट :—

- ४% प्रतिवर्ष ब्याज
- पैसा निकालने के लिए कोई नोटिस की ज़रूरत नहीं
- साल में १५० चैक
- १४ साल से ऊपर के बच्चे निजी खाता खोल सकते हैं

मियादी डिपॉज़िट :—

- ७½% प्रतिवर्ष तक ब्याज

दी बैंक ऑफ इन्डिया लि

टी. टी. कन्नाडा, जनरल मैनेजर

स्टेट बैंक बिजनौर

द्वितीय 'पराग' बाल एकांकी प्रतियोगिता :

नि र्ण य

'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिताओंका मुख्य उद्देश्य हिन्दीमें मौलिक बाल-एकांकियोंकी रचनाको प्रोत्साहन देना रहा है। जिस प्रकार प्रौढ़ नाटक साहित्य राजा-रानियों, पशु-पक्षियों, परियों व राक्षसों-के कल्पना-प्रधान रूपकोंकी परंपराको छोड़कर प्रति दिनके सामान्य जीवनसे अपने कथ्य उठाने लगा है, उसी प्रकार हमारी कामना है कि भारतीय बाल-साहित्य भी उन अति-कल्पनाओंसे अपना पिंड छुड़ाकर दैनिक जीवनसे अपना संपर्क स्थापित करे और उनमें वे समस्याएं उभरकर आएं, जो छोटी छोटी होते हुए भी बच्चों-के दैनिक कार्यकलापको प्रभावित करती हैं। बच्चोंके माता-पिता व अन्य बड़े जन जिस प्रकारकी राजनीतिक-सामाजिक हलचलोंमें लिप्त रहते हैं, उनकी छाया निश्चय ही बच्चोंके जीवनपर भी पड़ती है—और उसी धूप-छायाके बीचसे उन्हें अपनी नन्ही-सी बुद्धिके सहारे राहें निकालनी पड़ती हैं। ये ही राहें बनाते बनाते वे बड़े होते हैं और बचपनके बने उनके दृष्टिकोण उनकी प्रौढ़ताके प्रतीक बन जाते हैं।

इस द्वितीय प्रतियोगितामें लगभग साढ़े तीन सौ नाटक हमें प्राप्त हुए। सात नाटक ऐसे निकले, जिन्हें 'पराग'में प्रकाशित किया जा सकता है। इन्हींमेंसे तीन नाटक हमें तीनों पुरस्कारोंके लिए चुनने थे। पर्याप्त विचार-विमर्शके बाद तीनों पुरस्कार इस प्रकार निश्चित हुए :

प्रथम पुरस्कार : २५० रु. श्री सत्य जैसवाल (द्वारा जैसवाल मेडिकल हाल, मु. पो. सहपऊ, जिला मथुरा, उ. प्र.) को उनके एकांकी 'तोतली भाषाका सूबा' पर।

द्वितीय पुरस्कार : १५० रु. श्री मस्तराम कपूर 'जमिल' (बी २४ कर्मला, लोदी रोड, नई दिल्ली—३) को उनके एकांकी 'टोली-प्रवेश' पर।

तृतीय पुरस्कार : १०० रु. श्री विनोदकुमार भारद्वाज (१०। ए, सिंगार नगर, लखनऊ, उ. प्र.) को उनके एकांकी 'भूख हड़ताल' पर।

प्रस्तुत प्रतियोगितामें पुरस्कृत प्रथम व तृतीय एकांकी प्रौढ़ जीवनकी राजनीतिक हलचलोंकी बाल-सुलभ प्रतिच्छायाएं हैं। जैसे प्रौढ़-जीवनकी ये बड़ी-बड़ी बातें बाल-जीवनके मनमौजीपनमें प्रकट होकर विनोदका साधन बनती हैं, वैसे ही हम आशा करते हैं कि इनको पढ़ने, खेलने व देखने वाले बच्चे जब बड़े होंगे तो इन समस्याओंके पीछे झांकने वाला विनोद उनकी बुद्धिको कट्टरपंथी होनेसे बचाएगा। द्वितीय पुर-स्कार प्राप्त नाटक एक सामान्यसे दृश्यके साथ खेलने योग्य आधुनिक बाल-एकांकी है, जो बाल-जीवनकी एक अत्यंत सामान्य किंतु महत्वपूर्ण घटनाकी ओर दर्शकका ध्यान आकर्षित करता है। दूसरे व तीसरे एकां-कियोंकी स्वाभाविकता जहां प्रशंसनीय है, वहां पहले नाटककी अतिरंजनामें ही उसका व्यंग्य है।

'पराग' परिवार तीनों पुरस्कार-विजेताओंको हार्दिक बधाई देता है और कामना करता है कि हिन्दीका मौलिक बाल-साहित्य उनकी श्रेष्ठ रचनाओंसे निरंतर समृद्ध होता रहेगा। —संपादक

सोवियत भूमिसे पिताके पत्र (पृष्ठ २७ से आगे)

आप लोग जानते हैं कि तंदुरुस्ती बड़ी भारी नियामत है। डाक्टरोंकी शरण लेनेसे तंदुरुस्ती कभी ठीक नहीं रह सकती। तो फिर तंदुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए क्या किया जाए? यदि आप इसपर गौर करना चाहते हैं, तो आइए, हमारा खेल देखिए।'' मैं सोचने लगा कि क्या सर्कस भी शुद्ध मनोरंजनकी वस्तु नहीं? यहां भी प्रयोजन और उद्देश्यकी बात है?

यह सर्कस जानवरोंका इतना नहीं था, जितना कि स्त्री-पुरुषोंका। उछल-कूद, भाग-दौड़, तारपर चलना, किसीके सिरपर खड़े हो जाना आदि बातोंकी ही मुख्यता थी।

रात बहुत हो गई है। पत्र यहीं समाप्त कर देना चाहता था। लेकिन एक बात रह गई है, उसे भी लिख देना चाहता हूं। वह है लेनिनग्राड विश्वविद्यालयके बारेमें।

लेनिनग्राड विश्वविद्यालयमें २० हजार विद्यार्थी शिक्षण पा रहे हैं। कुल मिलाकर १३ विभाग हैं जिनमें विविध विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। यहांके पुस्तकालय में लगभग २० लाख पुस्तकें हैं।

बाकी बातें अगले पत्रमें लिखूंगा।

तुम्हारा पिता,
जगदीशचंद्र

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई अंकोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषाभाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

बंडी और बरसात

ऐसी क्या बात हुई,
दिन ढला, रात हुई!
घर से चले दावत को,
एकदम बरसात हुई!

गीली पगडंडी थी,
हवा बहुत ठंडी थी;
बरसाती भूल गए,
पहन ली बंडी थी!

—सुधाकर दीक्षित

मुखर मेंढकी!

मुखर मेंढकी चतुर बड़ी,
शहर घूमने निकल पड़ी,
केले पर जो पांव पड़ा,
बीच सड़क पर फिसल पड़ी!

—सीताराम गुप्त

शेखी

जामुन लुढ़क लुढ़क कर बोले,
"हम हैं शालिग्राम।"
"मैं हूं सबका राजा," बोला—
दाढ़ीवाला आम।
शेखी अंगूरों ने मारी—
"बड़ा हमारा नाम!"
टूटे पड़े लंगूर, कर गए
सबका काम तमाम!

नादानी

मिट्ठू बंदर बड़ा चिबिल्ला,
करता था शैतानी,
मगर एक दिन अनजाने ही,
कर बैठा नादानी!

एक ऊंट के ऊपर चढ़कर,
चलने की जब ठानी,
उछला ऊंट, गिरा तब मिट्ठू,
याद आ गई नानी!

अजब तमाशा

नाच रहा था दुनदुन हाथी,
हिनहिन घोड़ा गाए!
दमदम बंदर ढोल बजाए,
भैंस खड़ी पगुराए!

—मंगलराम मिश्र

म्याऊं

आओ, म्याऊं, बैठो जी,
पिओ दूध मत ऐंठो जी!
देखो भरा कटोरा है,
कौन कहे यह थोड़ा है?

इसमें मिसरी पड़ी हुई,
खूब मलाई चढ़ी हुई;
गुस्सा परे हटाओ जी,
अब तो भोग लगाओ जी!

—धीरेन्द्र कश्यप

बी-गोविंद

सैमसन्स पेश करते हैं १४ साल से कम उम्रवाले लड़कों के लिए
तरह तरह की चुस्त, टिकाऊ बनी-बनाई पोशाकें

भारत की मशहूर मिलों के उत्तम कपड़ों से प्रस्तुत —मशीन से सिली पोशाकें तरह तरह के डिज़ाइनों और रंगों में मिलती हैं।

सूती हाफ पैन्ट • 'टेरिन'/सूती सैंकरा मोहरी वाला हाफ पैन्ट • 'टेरिन'/सूती पतलून • सादा और डबी बुश-शर्ट • हैन्डलूम और छपे बुश शर्ट • 'टी' शर्ट • आधा आस्तीन का शर्ट • आधा आस्तीन का स्काउट शर्ट • पूरा आस्तीन का शर्ट

बिलकुल फिट - बिलकुल सुन्दर - बिलकुल अपनी

दि बंगलोर ड्रेस मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड,
बंगलोर-२

SAMSONS DRESSES

सैमसन्स की पोशाकें अनुमोदित स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइन बोर्ड लगा है।

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५२

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० अगस्त तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालों-की उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचे-वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूतियां भेजनेका पता: **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५२), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।**

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-५२

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

एक नन्हे बालक का कपड़े पहनना सीखना उसके बुद्धा होने का प्रमाण है। आप उसे स्वावलम्बी बनना सिखाकर शक्तिशाली बनाते हैं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हें बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें— उन्हें दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखावें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया 'फोरहन्स' टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मैनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

P. 10

मुफ्त! "दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" संबंधी रंगीन पुस्तिका

यह पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में मिलती है। इसे मँगवाने के लिए १० पैसा के टिकट (डाक खर्च के वास्ते) इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेन्टल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम: _____

पता: _____

माध्य: _____

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४९ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४९ में जिन पत्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- प्रदीप धवन, द्वारा श्री चमनलाल धवन, ६।४४, रसपुरमंडी रोड, देहरादून (उ. प्र.)।
- कुमारी अरुणा गोस्वामी, द्वारा श्री भगवानदत्तजी गोस्वामी, साहित्य साधना सदन, गोस्वामी चौक, बीकानेर (राजस्थान)।
- दिलीपकुमार गुहा, द्वारा श्री जी. एस. गुहा अत्तरसिंह कांट्रेक्टरका बंगला, ११९, धरमपेठ एक्सटेंशन, नागपुर (महाराष्ट्र)।

पहला चित्र है प्रदीप धवनका। इस चित्रमें बच्चेके हाथमें बंसी तथा बंदरके हाथमें मछलीकी कल्पना अच्छी है। वातावरणसे मेल खाते हुए रंगोंके चुनावमें काफी सावधानी बरती गई है, जिससे चित्रमें निखार आ गया है।

दूसरा चित्र है कुमारी अरुणा गोस्वामीका। इसमें दो बच्चों, पेड़के तनेमें तोतोंके जोड़े तथा खरगोश आदिकी कल्पना सुंदर जरूर है, लेकिन रंग अगर कुछ कम चटकीले होते, तो चित्रकी सुंदरता और बढ़ जाती।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमेंसे बुद्धिचंद रैगर, सरदार शहर; विरेन्द्रकुमार मंगरोल, कानपुर; कुमारी बीना ठाकुर, देहरादून; कुमारी मिथिलेश गुप्ता, मेरठ; कुमारी सुनिता तैलंग, सिवनी; कुमारी मधुबाला सर्वे, मुरादाबाद; रूपनारायण अवस्थी, कानपुर; अमरकुमार वर्मा, अलीगढ़; पनराज सुथार, जोधपुर; महिन्द्रसिंह, नई दिल्ली; कुमारी अंजना गुप्ता, इलाहाबाद; कुमारी बीना कौल, नई दिल्ली; राजेन्द्रकुमार शर्मा, चन्दौसी और राजेन्द्रकुमार, सोहनाके प्रयास अच्छे रहे। ●

प्रशान्त कुमार
C/o श्री जगदीश चन्द्र
M.A.B.T.
M.ED

अब तक .....
नाश्ते के लिये ऐसा आहार
उपलब्ध नहीं था

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
कार्न फ़्लेक्स

मोहन्ज़
व्हाइट ओट्स

मोहन्ज़
न्यू
लाइफ
व्हीट फ़्लेक्स

मोहन्ज़
पर्ल बार्ले

११० वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

डायर मीकिन ब्रुअरीज़ लि० स्थापित १८५५
मोहन नगर, (गाज़ियाबाद) यू० पी०
सोलन ब्रुअरी — लखनऊ डिस्टिलरी — कसौली डिस्टिलरी

DMB-NP-759